

जून, 2023

प्रतिध्वनि

राज्य की सर्वोच्च सिविल सेवा की यथार्थ गूंज



राजस्थान प्रशासनिक सेवा परिषद्





गौरव बजाइ

अध्यक्ष

राजस्थान प्रशासनिक सेवा परिषद्



प्रधान संपादक

विष्णु कुमार गोयल



संपादक

श्रीमती नीतू राजेश्वर



सह संपादक

श्रीमती सरिता शर्मा

प्रकाशक :



राजस्थान प्रशासनिक सेवा परिषद्

2, संस्थानिक क्षेत्र, दैनिक भास्कर कार्यालय के पास,
जे.एल.एन.मार्ग, जयपुर-302017 फोन : 2703695

आवरण संयोजन :

मोईन खान

मुद्रक :

हार्डटेक डिजिटल प्लेट्स इण्डिया प्रा. लि.

मो. 9829027797

यह प्रकाशन राजस्थान प्रशासनिक सेवा एवं प्रशासनिक क्षेत्रों में निःशुल्क वितरण के लिए है।

परिषद् की अनुमति के बिना पत्रिका या उसके किसी भी अंश का अन्यत्र उपयोग निषिद्ध है।

प्रतिध्वनि में प्रकाशित लेखों में लेखकों के निजी विचार हैं, राजस्थान प्रशासनिक सेवा परिषद् का सहमत होना आवश्यक नहीं।



सम्पादकीय...



सम्मानित साथियों,

‘प्रतिध्वनि’ का यह अंक विनम्रतापूर्वक आपको समर्पित है। साहित्य लेखन में अनुभव शून्यता के बावजूद प्रतिध्वनि का संपादन हमारे लिए गौरव का अवसर है। राजस्थान प्रशासनिक सेवा के सदस्यों की इस वैशिष्ट्यता की संवेदना, ‘प्रतिध्वनि’ संपादन कार्य में हमारी ऊर्जा रही है। त्रैमासिक से वार्षिक होती हुई प्रतिध्वनि अब एक कार्यकारिणी के कार्यकाल में एक बार प्रकाशित होने की प्रथा बन गई प्रतीत होती है। परिषद के सदस्यों तथा उनके पति/पत्नी की सृजनधर्मिता को मंच प्रदान करती रही प्रतिध्वनि पुनः नियमितता को कैसे प्राप्त हो यह सबको विचार करना चाहिए। इस अंक के प्रकाशन में असाधारण विलम्ब के लिए हम क्षमाप्रार्थी हैं।

3 अप्रैल 2022 को परिषद के अधिवेशन से प्रारंभ होकर AIF के 16वें अधिवेशन तक की सभी गतिविधियों का समावेश करते इस अंक में जहां एक ओर हमारे स्व-नाम धन्य साहित्यकार साथियों की रचनाएँ हैं वहीं हमारे युवा साथियों की काव्यप्रतिभा पठनीय है। सेवानिवृत्त साथी श्री हरि शंकर गोयल की कहानी ‘विनी’ हमारे अमर शहीदों के परिवारों के मनोभावों को भावाजंली है। श्री अम्बिकादत्त की कहानी “भागीलाल” सरकारी तंत्र की कार्यप्रणाली पर करारा व्यंग है। बहिन प्रियंका जोधावत की पुस्तक ‘कुछ दिल ने कहा’ के विमोचन कार्यक्रम में पुस्तक की समीक्षा तो श्री सूरज सिंह नेगी के उपन्यास “सांध्य पथिक” के परिचय से यह अंक सुसज्जित है।

यह पत्रिका, रासा द्वारा इस अवधि में अपने सदस्यों के हितों में उठाए गये कदमों के समावेश के साथ ही सम्मानित सदस्यों के पति/पत्नी एवं आश्रित बच्चों के व्यक्तित्व विकास/मनोरंजन के लिए आयोजित गतिविधियों की साक्षी भी है। वर्ष 2021 में रासा परिवार में 79 नये साथियों के शामिल होने पर उनके स्वागत के साथ-साथ अभिनव पहल ‘अनुभव और जोश-एक संवाद’ इस अंक की विशेषता है।

जिन साथी अधिकारियों ने अपनी रचनाएँ ‘प्रतिध्वनि’ के लिए भेजी हैं, उन सभी का हम आभार व्यक्त करते हैं। युवा साथियों से हमारा विशेष आग्रह है कि प्रशासनिक व्यस्तताओं के बावजूद अपने साहित्यिक मन को ‘प्रतिध्वनि’ के आंगन में नियमित भ्रमण कराते रहें। तभी प्रतिध्वनि का प्रकाशन सार्थक हो सकेगा और नियमित भी।

आशा है यह अंक संग्रहणीय रहेगा। आपके विचार, प्रतिक्रिया और सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी।

आने वाले निर्वाचन के अति महत्वपूर्ण एवं चुनौतीपूर्ण कार्य को सदैव की भांति आप सभी सफलतापूर्वक संपन्न कराने में यशस्वी रहेंगे। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

विष्णु कुमार गोयल
प्रधान संपादक

श्रीमती नीतू राजेश्वर
संपादक

श्रीमती सरिता शर्मा
सह संपादक



महासचिव की कलम से...



साथियों,

आरएसएस एसोसिएशन द्वारा 'प्रतिध्वनि' का यह विशेषांक आप सभी तक पहुंचाते हुए मैं सभी साथियों को सपरिवार शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ कि आप सभी का जीवन खुशियों से भरपूर रहे, परिवार उत्तरोत्तर प्रगति करे और स्वस्थ रहे।

एसोसिएशन के इस महत्वपूर्ण पद पर निर्विरोध पदस्थापित करने के लिए मैं आप सभी सम्मानीय साथियों तथा वरिष्ठ एवं मार्गदर्शक अधिकारियों का अन्तर्मुख से आभार व्यक्त करता हूँ और विश्वास दिलाता हूँ कि इस पद पर मैं अपनी पूर्ण कर्तव्यनिष्ठा के साथ कार्य करते हुए आरएसएस संवर्ग के प्रत्येक सदस्य के अधिकार के लिए अथक प्रयास करूंगा।

'प्रतिध्वनि' के इस विशेषांक में जहां एक ओर एसोसिएशन द्वारा किये गये प्रयासों और परिणामों की जानकारी समाहित है वहीं दूसरी ओर इसमें हमारे साथियों की रचनाओं को सम्मिलित किया गया है।

एसोसिएशन द्वारा किये गये प्रयासों की कड़ी में आपको अवगत करवाना चाहूंगा कि अध्यक्ष महोदय के मार्गदर्शन में एसोसिएशन, आरएसएस अधिकारियों के वर्तमान में स्थापित पदोन्नति चैनल के अतिरिक्त अलग से एक अपेक्स स्केल का चैनल सृजित करवाने हेतु प्रयत्नशील है ताकि अन्य राज्यों की भांति राज्य सेवा के अधिकारियों को भी उचित पदोन्नति लाभ प्राप्त हो सके तथा जो अधिकारी आईएसएस सेवा में पदोन्नत होने से वंचित रह जाते हैं उन्हें सम्मानजनक वेतन एवं पद प्रदान किये जा सकें। इसके अतिरिक्त उच्चतर वेतन शृंखलाओं में विद्यमान रिक्त पदों को भरने हेतु नियमों में संशोधन करवाने तथा रिक्त पदों को यथाशीघ्र भरवाने हेतु भी परिषद् प्रयासरत है।

हमारी सेवा को प्रीमियर सेवा के रूप में खास पहचान देने वाले उपखण्ड अधिकारी के पद को सशक्त बनाने हेतु परिषद् संकल्पबद्ध है। उपखण्ड अधिकारी कार्यालय में पदों का सृजन, पदस्थापन एवं अन्य सुविधाएं दिलवाने हेतु अध्यक्ष महोदय के मार्गदर्शन में गंभीर प्रयास किये जा रहे हैं। उपखण्ड अधिकारी को गनमैन दिलवाये जाने हेतु कार्य अंतिम चरण में है।

आपको यह बताते हुये मुझे गर्व है कि अध्यक्ष महोदय के प्रयासों से इस वर्ष राज्य प्रशासनिक सेवाओं के अखिल भारतीय फेडरेशन का 16वां अधिवेशन जयपुर में आयोजित किया गया। हमारे लिए यह गौरव की बात है कि राजस्थान प्रशासनिक सेवा परिषद् के अध्यक्ष श्री गौरव बजाड़ अखिल भारतीय फेडरेशन के अध्यक्ष सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए हैं। यह राजस्थान के लिए विशिष्ट गौरव के पल है।

विगत समय में हमारे कुछ साथियों को अकारण निलम्बित किया गया। यद्यपि निलम्बन सजा नहीं है परन्तु गंभीर चूक/त्रुटि के बिना निलम्बन से न केवल अधिकारी बल्कि सम्पूर्ण सेवा की प्रतिष्ठा को आघात लगता है। परिषद् द्वारा उक्त के क्रम में माननीय मुख्यमंत्री महोदय को वस्तुस्थिति से अवगत करवाया गया है एवं उनकी उदारता के कारण ही काफी निलम्बित अधिकारियों को बहाल करवाया जा सका है। इसके अतिरिक्त कई अन्य साथी अधिकारियों की सेवा सम्बन्धी व्यक्तिगत समस्याओं के निराकरण में भी परिषद् द्वारा अपनी सकारात्मक भूमिका निभाई गई है।

'एकता में ताकत है' (Unity is Strength) के सिद्धान्त का अनुसरण करते हुये परिषद् लगातार राजस्थान प्रशासनिक सेवा के उन्नयन हेतु प्रयासरत है। आशा करता हूँ कि इस परिवार के प्रत्येक सदस्य की समस्या को सबकी साझा समस्या मानते हुये हम सब मिलकर प्रयास करेंगे। मुझे पूरा भरोसा है कि सामूहिक प्रयासों से हम सब मिलकर आशातीत परिणाम प्राप्त करने में अवश्य सफल होंगे।

आर.एस.एस. कैडर की गरिमा बढ़ाना हम सबका व्यक्तिगत एवं सामूहिक उत्तरदायित्व है। अतः आशा करता हूँ कि हम सब अपनी व्यक्तिगत एवं सामूहिक गरिमा को बनाये रखते हुये अपेक्षित परिणाम यथाशीघ्र प्राप्त करेंगे।

(डॉ. प्रवीण कुमार)



अध्यक्ष की कलम से...



प्रिय साथियों,

राज्य सरकार की महत्वपूर्ण योजनाओं एवं राहत कैम्पों के माध्यम से राहत प्रदान करवाने में जुटे राजस्थान प्रशासनिक सेवा के सभी कर्मठ साथियों को मंगलकामनाएं।

साहित्य समाज का दर्पण होता है और साहित्यकार अपनी लेखनी के माध्यम से साहित्य में समाज का चित्रण करते हैं। उसी प्रकार राजस्थान प्रशासनिक सेवा परिषद् की पत्रिका 'प्रतिध्वनि' आर.ए.एस. अधिकारियों की नैसर्गिक साहित्य प्रतिभा को प्रदर्शित करती है। वर्तमान में 'प्रतिध्वनि' में प्रकाशित करने हेतु पठनीय सामग्री की उपलब्धता में कुछ कमी है। अतः आप सभी साथियों से विनम्र अनुरोध है कि अमूल्य समय में से कुछ समय निकालकर अपनी रचनाएं 'प्रतिध्वनि' के आगामी अंक हेतु उपलब्ध करवायें।

सभी साथियों का विशेष रूप से हृदय से धन्यवाद करना चाहूंगा कि आपके समन्वित सहयोग से ही हमने All India Federation of State Civil/Administrative Services का 16वाँ अधिवेशन जयपुर में (24-26 मार्च) सफलतापूर्वक आयोजित किया। इस अधिवेशन में विभिन्न मुद्दों पर चर्चा हुई जिनकी क्रियान्विति से कैडर मजबूत होगा एवं साथियों को पदोन्नति के अच्छे अवसर मिलेंगे।

परिषद् की वर्तमान कार्यकारिणी द्वारा समस्याओं के समाधान के लिये पूर्ण प्रयास किये गये हैं। पूर्व में किये गये कैडर उन्नयन के प्रयासों को वर्तमान में भी जारी रखा गया है जिससे सभी साथियों को इसका लाभ मिल सके। हमने अपनी सभी मांगों को सक्षम स्तर तक पहुँचाया है जिनमें कुछ हद तक सफलता मिली है और कुछ में अनावश्यक व्यवधान उत्पन्न किये गये हैं। जिसके समाधान हेतु कार्यकारिणी पूर्ण रूप से तत्पर है और आशा करते हैं कि शेष मांगों में भी हमें सकारात्मक संदेश मिलेगा।

RAS क्लब के सम्बन्ध में भी संक्षिप्त रूप से अवगत करवाना चाहूंगा कि आप सभी के सहयोग एवं विश्वास से गत एक वर्ष में हमने क्लब के सभी लम्बित दायित्वों का भुगतान करके 2.5 करोड़ की Fixed Deposit क्लब के नाम करवायी है। क्लब में विभिन्न सांस्कृतिक, साहित्यिक व खेलकूद गतिविधियों का आयोजन किया गया है, जिनकी झलकियाँ प्रतिध्वनि में आपको देखने को मिलेगी।

वर्तमान में सोशल मीडिया का उपयोग बहुत उपयोगी है परन्तु खेद के साथ कहना पड़ रहा है कि हम सोशल मीडिया पर कई बार अनावश्यक संदेश पोस्ट कर देते हैं, जिससे किसी जाति/वर्ग/धर्म को ठेस पहुँचती है इससे न केवल साथियों की भावनाएं आहत होती हैं वरन् आपसी सौहार्द भी कम होता है। कुछ युवा साथीगण सोशल मीडिया पर अपनी बात बहुत मुखर होकर रखते हैं। मैं उन सभी युवा साथियों के जोश की तारीफ करना चाहता हूँ परन्तु इसके साथ ही एक गुजारिश भी रहेगी कि हम अपनी बात को संयमित रूप से रखें जिससे अन्य साथियों की भावनाएं अनावश्यक रूप से आहत नहीं हों।

परिषद्, संगठन ही नहीं वरन् एक परिवार है। हम सभी को परिवार की प्रगति हेतु संगठित व समन्वित होकर प्रयास करने चाहिये जिससे संगठन की जो मजबूत छवि बनी हुई है वह बरकरार रहे। परिषद् के सभी सदस्यगण जनता के लिये पूर्ण रूप से समर्पित एवं वचनबद्ध हैं। हमें बदलते परिवेश में भविष्य में आने वाली चुनौतियों के सम्बन्ध में आत्मचिंतन व आत्मनिरीक्षण करना चाहिये।

साथियों आप सभी से अनुरोध है कि हम अपनी सेवाओं में मानवीय दृष्टिकोण को सर्वोच्च प्राथमिकता देकर जनसेवा के इसी ध्येय को आत्मसात कर स्वाभिमान और आत्म सम्मान के साथ अपने राजकीय दायित्वों का निर्वहन करें। अन्त में बस इतना ही कहना चाहूंगा कि परिषद् के सामूहिक प्रयासों को देखते हुए मेरा विश्वास है कि हम निजी और सार्वजनिक जीवन में उपलब्धियों का नया अध्याय लिखेंगे।

शुभकामनाओं सहित !

(गौरव बजाड़)



अनुक्रमणिका



1. राजस्थान प्रशासनिक सेवा परिषद् (अधिवेशन -3 अप्रैल, 2022)	7
2. RAS ASSOCIATION : Expenses from 01.04.2022 to 31.03.2023	14
3. AIF का 16वां अधिवेशन : साझा प्रयासों का एक रोचक अनुष्ठान	15
4. 16th Convention of All India Federation : Income - Expenditure Statement	25
5. विनी	: हरिशंकर गोयल 26
6. आरएस क्लब में सजी अनोखी साहित्यिक शाम	: प्रतीक सैनी 28
7. RAS Club Witnessed a Workshop on Calligraphy	: Arshdeep Brar 30
8. White Towel And A Cup Of Tea	: Kunal Rahar 44
9. 'ज्ञान संकल्प' - अभिनव पहल (बैरक में संचालित एक पुस्तकालय)	: चन्द्रशेखर भंडारी 45
10. नजरें निहारो नई आशा	: रामावतार कुमावत 47
11. यह खुशी का विषय है ...	: टीकम चंद बोहरा (अनजाना) 48
12. 'द्वार की देहरी'	: चन्द्रशेखर भंडारी 51
13. अनुभव और जोश - एक संवाद	52
14. गाँधी की आँधी और राजपूताना	: डॉ. धर्मेन्द्र भटनागर 54
15. संस्मरण - गिवाई	: डॉ. सूरज सिंह नेगी 58
16. भागीलाल	: अम्बिकादत्त 61
17. दीपावली स्नेह मिलन समारोह-2022	64
18. हैप्पी मदर्स डे	: हरिशंकर गोयल 67
19. आर. ए. एस. क्लब बैडमिंटन प्रतियोगिता	70
20. कविता की दीठ	: विजयसिंह नाहटा 73
21. RAS Club Members Grand Celebration Dandiya	74
22. कांस्य की थाली	: शिवाक्षी खाण्डल 78
23. RAS Club Musical Extra Vaganza (A Singing Contest)	79
24. खेल रहा है राजस्थान	: अभिमन्युसिंह 81
25. गज़ल	: लोकेश कुमार मीणा (फ़रीद) 82
26. RAS Club Members Teej Celebration	83
27. RAS क्लब बॉक्स प्रीमियर क्रिकेट लीग (17-20 नवम्बर, 2022)	87
28. RAS Club - Financial Statement (01.04.2022 to 31.03.2023)	95
29. उपन्यास सांध्य पथिक से	: डॉ. सूरज सिंह नेगी 96



राजस्थान प्रशासनिक सेवा परिषद्

कार्यकारिणी

परामर्शदात्री मण्डल

- | | | | |
|--------------------------------|--------------------|------------------------|-----------------------|
| 1. श्री राजेन्द्र प्रसाद शर्मा | 2. श्री अरूण गर्ग | 3. श्री राजेन्द्र सिंह | 4. श्री शाहीन अली खान |
| 5. श्री सुखवीर सैनी | 6. श्री जसवंत सिंह | 7. श्री राकेश शर्मा | 8. श्री हर सहाय मीणा |

अध्यक्ष

श्री गौरव बजाड़

कार्यकारी अध्यक्ष

श्री अजय असवाल

मुख्य सलाहकार

श्री केसर लाल मीणा

महासचिव

डॉ. प्रवीण कुमार

कोषाध्यक्ष

श्री संजय शर्मा

वरिष्ठ उपाध्यक्ष

- | | |
|-------------------------|---------------------------|
| 1. श्री शिव प्रसाद सिंह | 2. श्री जुगल किशोर मीणा |
| 3. श्री सुरेश नवल | 4. श्री विष्णु कुमार गोयल |
| 5. श्री कैलाश यादव | |

सांस्कृतिक सचिव

- | | |
|--------------------------|------------------------|
| 1. श्रीमती नीतू राजेश्वर | 2. श्रीमती विनीता सिंह |
| 3. श्रीमती अंशदीप बराड़ | |

उपाध्यक्ष

- | | |
|--------------------------|------------------------------|
| 1. श्रीमती निमिषा गुप्ता | 2. श्रीमती रंजिता गौतम |
| 3. श्री सुरेश यादव | 4. श्री मानसिंह मीणा |
| 5. श्री योगेश श्रीवास्तव | 6. श्री इंद्रजीत सिंह |
| 7. श्री गोपाल सिंह | 8. श्री महेन्द्र प्रताप सिंह |

संयुक्त सचिव

- | | |
|---------------------------|---------------------------|
| 1. श्रीमती भावना गर्ग | 2. श्री सुरेश कुमार बुनकर |
| 3. श्री राजेन्द्र सिंह-II | 4. श्री दीपांशु सांगवान |
| 5. श्री अभिषेक चारण | 6. श्री गोपाल परिहार |
| 7. श्री रामकिशोर मीणा-II | 8. श्री राकेश कुमार-II |

सचिव

- | | |
|--------------------------|--------------------------|
| 1. श्रीमती कश्मी कौर रान | 2. श्री मनोज कुमार शर्मा |
| 3. श्री चांदमल वर्मा | 4. श्रीमती अनुपम कायल |
| 5. श्री राकेश कुमार मीणा | 6. श्री जावेद अली |
| 7. श्री महिपाल सिंह | |

अंकेक्षक

- | | |
|-----------------------------|-----------------------|
| 1. श्री कैलाश नारायण मीणा | 2. श्री राकेश कुमार-I |
| 3. श्री सैयद शिराज अली जैदी | |



राजस्थान प्रशासनिक सेवा परिषद्

कार्यकारिणी सदस्य

- | | |
|-----------------------------|--------------------------------|
| 1. श्री अरविन्द सारस्वत | 2. श्रीमती बिन्दु करूणाकर |
| 3. श्री भगवत सिंह | 4. श्रीमती मुन्नी मीणा |
| 5. मो. अबू बक्र | 6. श्री बजरंग सिंह |
| 7. श्री शैलेन्द्र देवड़ा | 8. श्री ओम प्रकाश बुनकर |
| 9. श्री अखिलेश कुमार पीपल | 10. श्री अशोक कुमार-चतुर्थ |
| 11. श्री महेन्द्र सिंह | 12. श्रीमती अनीता चौधरी |
| 13. श्री बलवन्त लिग्री | 14. मो. सलीम खान |
| 15. श्री अशोक कुमार योगी | 16. श्री सैयद मुकर्रम शाह |
| 17. श्री राष्ट्रदीप यादव | 18. डॉ. धारा सिंह मीणा |
| 19. श्री अशोक सांखला | 20. श्रीमती रेखा सामरिया |
| 21. श्री मोहन लाल खटनावलिया | 22. श्री हीरालाल मीणा |
| 23. श्री अजय कुमार आर्य | 24. श्री सावन कुमार चायल |
| 25. श्री सुरेश चौधरी | 26. सुश्री निशा गर्ग |
| 27. श्रीमती रक्षा पारीक | 28. श्री चम्पालाल जीनगर |
| 29. श्री भास्कर विश्नोई | 30. श्री योगेश डागुर |
| 31. श्री मनमोहन मीणा | 32. श्री विनोद कुमार मल्होत्रा |
| 33. श्री महेश चन्द मान | 34. श्री केशव कुमार मीणा |
| 35. सुश्री देवयानी | 36. श्री प्रवीण कुमार-II |
| 37. श्री जे.पी. बैरवा | 38. श्री दिलीप सिंह |
| 39. श्री ओम प्रकाश मीणा | 40. श्रीमती अपूर्वा पारवाल |
| 41. श्री शैलेश खैरवा | 42. श्री कार्तिकेय मीणा |
| 43. श्रीमती सरिता शर्मा | 44. श्री देवीलाल यादव |
| 45. श्रीमती पद्मा चौधरी | 46. श्री हुकमी चन्द रूलानिया |
| 47. श्री शिवराज मीणा | 48. श्री रवि गोयल |
| 49. श्रीमती अर्चना बुगालिया | 50. श्री गोविन्द भींचर |

राजस्थान प्रशासनिक सेवा परिषद्

अधिवेशन -3 अप्रैल, 2022



श्री अशोक गहलोत, माननीय मुख्यमंत्री एवं अन्य अतिथियों का आगमन





राजस्थान प्रशासनिक/पुलिस/लेखा सेवा संयुक्त अधिवेशन – अतिथियों का स्वागत





श्री अशोक गहलोत माननीय मुख्यमंत्री, राजस्थान-संयुक्त अधिवेशन को संबोधित करते हुए



श्री गोविन्द सिंह डोटासरा, अध्यक्ष पीसीसी – अध्यक्षीय उद्बोधन



श्रीमती उषा शर्मा, मुख्य सचिव राजस्थान – आशीर्वचन





मधुर स्मृतियाँ





नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री गौरव बजाड़, सदस्यों के साथ





नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री गौरव बजाड़, सदस्यों के साथ





RAS ASSOCIATION



Expenditure (April 1, 2022 to March 31, 2023)

S.N.	Description	Spent Amount (₹)
1	RAS Adhiveshan, 2022	11,50,107
2	Tour & Travelling	3,07,881
3	RAS Association Meeting & Others	2,71,284
4	Diwali Sneh Milan	2,50,997
5	Miscellaneous	1,86,773
	Grand Total	21,67,042



ऑल इंडिया फ़ेडरेशन ऑफ़ ऐडमिनिस्ट्रेटिव ऑफिसर्स एसोसिएशन 16वां अधिवेशन 'साझा प्रयासों का एक रोचक अनुष्ठान'



श्रीमती सरिता शर्मा
सहायक कलेक्टर, बस्सी



15 वर्षों के बाद ऑल इंडिया फ़ेडरेशन ऑफ़ सिविल/ऐडमिनिस्ट्रेटिव ऑफिसर्स एसोसिएशन, के 16वें अधिवेशन के आयोजन की आधिकारिक घोषणा हुई और इसकी मेजबानी का सौभाग्य मिला राजस्थान प्रदेश की राजधानी, गुलाबी नगरी जयपुर को।

घोषणा के साथ ही त्याग, समर्पण, साहस और वीरता का सिरमौर राजस्थान, आतिथ्य-सत्कार परम्परा को चरितार्थ करने के लिए इस समागम को सरल और स्मरणीय बनाने की तैयारी में जुट गया।

ऑल इंडिया फ़ेडरेशन ऑफ़ सिविल/ऐडमिनिस्ट्रेटिव ऑफिसर्स एसोसिएशन, देश के सभी राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों का एक राष्ट्रव्यापी साझा मंच है जो राज्य प्रशासनिक सेवाओं के बीच एकता को बढ़ाने एवं सदस्य संगठनों के सामूहिक लाभ के कार्य करने के लिए प्रतिबद्ध है।

16वें अधिवेशन की मेजबानी के दायित्व को चुनौती के रूप में स्वीकार कर राजस्थान प्रशासनिक सेवा परिषद् के सभी सदस्य तन मन धन से एकजुट होकर इस अवसर को “न भूतो न भविष्यति” बनाने के लिए समर्पित भाव से अपने-अपने कामों में जुट गये। इस दौरान कहीं स्मारिका की विषय-वस्तु पर गहन चिंतन तो कहीं सांस्कृतिक कार्यक्रम की अनोखी शाम पर चर्चा हो रही थी। कहीं राजस्थानी जायके के स्वादिष्ट पकवानों की सूची पर मनन तो कहीं आगंतुकों के सहज आवागमन की व्यवस्था पर मंथन चल रहा था। तमाम तैयारियों के इसी क्रम में देश भर से पधारे सभी डेलीगेट्स के लिए एयरपोर्ट, रेलवे स्टेशन के साथ साथ-साथ OTS रीपा में भी Travel Help Desk की सुविधा उपलब्ध करवाई गई।



श्री रामलाल जाट, माननीय राजस्व मंत्री एवं श्री कुंजीलाल मीणा (IAS)-AIF पदाधिकारियों के साथ

कार्यक्रम का पहला दिन : शुभारंभ और स्वागत -सत्कार

24 मार्च को इस अखिल भारतीय सम्मेलन के शुभारंभ का साक्षी बना हचमा रीपा OTS संस्थान। सभी मेहमानों का भारतीय सांस्कृतिक परंपरा के अनुसार तिलक लगाकर स्वागत किया गया। स्वागत सत्कार के बाद प्रथम दिन के सत्र में AIF एवं रासा के संयुक्त तत्वाधान में प्रेस मीटिंग हुई जिसमें रासा के अध्यक्ष द्वारा तीन दिवसीय आयोजन की रूपरेखा मीडियाकर्मियों के समक्ष रखी गई। इसके बाद AIF की Executive Committee की बैठक का आयोजन हुआ जिसमें महासंघ की अब तक की प्रगति की समीक्षा के साथ-साथ ही भविष्य के प्रस्तावों पर विचार विमर्श किया गया।



AIF प्रेस वार्ता – जिबोन चक्रवर्ती, एस.एस. ढिल्लो, लाजवीर सिंह, शाहीन अली खान एवं गौरव बजाड़



AIF कार्यकारी समिति की बैठक

कार्यक्रम का दूसरा दिन : औपचारिक उद्घाटन और समापन संध्या

कार्यक्रम की अगली सुबह औपचारिक उद्घाटन सत्र में यद्यपि श्री अशोक गहलोत माननीय मुख्यमंत्री महोदय द्वारा परिषद् के अनुरोध पर मुख्य अतिथि के रूप में पधार कर कार्यक्रम को गौरवान्वित करने के लिए आश्वस्त किया था किन्तु अपरिहार्य घटनाक्रम के चलते उनके दिल्ली प्रस्थान करने से हमारे अतिथिगण रहे-माननीय मंत्री डॉ.बी.डी.कल्ला जी और श्रीमान रामलाल जाट जी। अपने उद्बोधन के दौरान शिक्षा मन्त्री डॉ.बी.डी. कल्ला जी ने कहा कि राज्य प्रशासनिक सेवा, प्रशासन के रीढ़ की हड्डी है और ये ही सुशासन का आधार है। उन्होंने बताया कि माननीय मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने मॉडल स्टेट के रूप में राजस्थान के सपने को पूरा करने में और योजनाबद्ध विकास के लिए राज्य प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों का बहुत ही अहम योगदान है।



डॉ. बी.डी.कल्ला, माननीय शिक्षा मंत्री द्वारा उद्बोधन



श्री रामलाल जाट, माननीय राजस्व मंत्री द्वारा उद्बोधन

इसी दौरान राजस्व मंत्री माननीय रामलाल जाट ने संबोधित करते हुए कहा कि आमजन के भविष्य में सुधार की जिम्मेदारी राज्य के प्रशासनिक अधिकारियों के कंधों पर होती है उन्होंने रासा के अध्यक्ष को देश भर के राज्य प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों को एक साथ एक मंच पर लाने और राजस्थान को इसकी मेजबानी का अवसर मिलने पर खुशी जाहिर की।

इसी सत्र में राजस्थान प्रशासनिक सेवा परिषद् द्वारा तैयार स्मारिका का विमोचन किया गया और स्मारिका के इस संस्करण में महासंघ के संगठनात्मक ढांचे, गत वर्षों में विभिन्न राज्यों में आयोजित अधिवेशन से जुड़ी झलकियों के साथ-साथ विद्वानों के लेख इत्यादि जानकारी समाहित की गई है।



AIF स्मारिका विमोचन



श्री रामलाल जाट, माननीय राजस्व मंत्री का स्वागत

कार्यक्रम के समापन समारोह में विधानसभा के माननीय अध्यक्ष डॉ. सी.पी. जोशी एवं माननीय उद्योग मंत्री शकुंतला रावत मुख्य अतिथि रहे। डॉ. सी.पी. जोशी ने देश में सभी राज्यों की प्रशासनिक सेवाओं में एकरूपता को बेहद आवश्यक बताया ताकि गुणवत्तापूर्ण शासन पूरे देश में स्थापित हो सके साथ ही कार्यक्रम में उद्योग मंत्री श्रीमती शकुंतला रावत ने प्रशासनिक सेवा के महत्त्व को स्वीकार करते हुए कहा कि विकास को गति देने का कार्य, सरकार की सभी कल्याणकारी योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाने का कार्य राज्य प्रशासनिक सेवा द्वारा ही किया जाता है, इसके लिए देश के सभी प्रशासनिक अधिकारी बधाई के पात्र हैं।



डॉ. सी.पी.जोशी, माननीय अध्यक्ष, राजस्थान विधान सभा द्वारा उद्बोधन



श्रीमती शकुन्तला रावत, माननीय उद्योग मंत्री, राजस्थान द्वारा उद्बोधन



डॉ. बी.डी. कल्ला, माननीय शिक्षा मंत्री को प्रतीक चिन्ह भेंट करते हुए



डॉ. सी.पी.जोशी, माननीय अध्यक्ष, राजस्थान विधान सभा का स्वागत

इसी दौरान माननीय विधानसभा अध्यक्ष और उद्योग मंत्री महोदया ने अन्य अतिथियों के साथ All India Federation द्वारा तैयार 'राज्य प्रशासनिक सेवाओं के मॉडल नियम और विनियम' पुस्तक का विमोचन किया।

समापन सत्र को जीवंत और यादगार बनाए रखने के लिए राजस्थान में पधारे सभी मेहमानों के लिए एक खूबसूरत सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया जिसमें राजस्थानी कला और लोक संस्कृति के रंग से सराबोर आकर्षक प्रस्तुतियां शामिल थीं।



डॉ. सी.पी.जोशी माननीय अध्यक्ष, राजस्थान विधान सभा –
राज्य प्रशासनिक सेवाओं के मॉडल नियम और विनियम पुस्तक का विमोचन करते हुए



सांस्कृतिक संध्या में राजस्थानी बहुरंगी संस्कृति की रंगबिरंगी छटाएँ

कार्यक्रम का तीसरा दिन : बौद्धिक सेमिनार और महासंघ की साधारण सभा की बैठक

26 मार्च को अधिवेशन के तीसरे दिन "Central state relations in the 75th year of the Indian Republic in the new paradigm of cooperative federalism and the role of the SCS in the evolving governance structure" and "Gradual drift in the outlook of civil servants; a way forward" विषयों पर सेमिनार का आयोजन किया गया। देश के Former CAG श्रीमान राजीव महर्षि महोदय ने चर्चा के दौरान बताया कि प्रशासन के हर एक स्तर पर अधिकारियों की जवाबदेही सुनिश्चित होना सुशासन की सबसे बड़ी आवश्यकता है।



श्री गौरव बजाड़, अध्यक्ष, अतिथियों का स्वागत करते हुए



AIF समारोह में पधारे हुए सम्मानित सदस्यगण

इसी क्रम में All India Federation की साधारण सभा की बैठक के दौरान विभिन्न राज्यों से आए प्रशासनिक अधिकारियों ने अपने अनुभवों और चुनौतियों को साझा किया। इस बैठक में राजस्थान प्रशासनिक सेवा परिषद् के अध्यक्ष श्री गौरव बजाड़ को निर्विरोध राष्ट्रीय अध्यक्ष चुना गया। लगभग 18 राज्यों के प्रतिनिधियों ने इसमें भाग लिया, जिन्होंने अध्यक्ष के साथ-साथ नई कार्यकारिणी के गठन पर सर्वसम्मति से अपनी मुहर लगायी।



AIF जनरल बॉडी मीटिंग – श्री गौरव बजाड़ का AIF अध्यक्ष के रूप में निर्वाचन



AIF में विभिन्न राज्यों से पधारे प्रतिनिधि एवं रासा सदस्यगण

तीन दिवसीय इस कार्यक्रम के दौरान सभागार में उपस्थित हर व्यक्ति, हर भागीदार साक्षी है कि राजस्थान के आतिथ्य-सत्कार, सेवा और समर्पण की अनवरत गूँज कई दिनों तक प्रतिध्वनित होती रही। बहुतेरे काम, गहन संवाद, विशिष्ट दलों का जन्म और गजब का अनुशासन, इन सभी का सुखद परिणाम रहा-सफलतम आयोजन!

इसमें शीर्ष स्तर की नेतृत्व क्षमता और कार्य प्रबंधन के साथ-साथ राजस्थान की धरा में रची-बसी आतिथ्य प्रेम की भावधारा सहायक रही, जिसकी वजह से ही पधारे सभी मेहमान यहाँ बिताए हर पल, हर क्षण को अत्यंत आत्मीयता और आदर के साथ अपनी स्मृति में चिरस्थायी रखना चाहेंगे!!!



सांस्कृतिक संध्या में राजस्थानी संस्कृति की रंगबिरंगी छटायें

16th Convention of All India Federation

Income - Expenditure Statement

S.N.	Description	Amount (₹)
1	Amount Received from Sponsor's	24,25,000
2	Amount Received from States	1,70,000
Total		25,95,000

S.N.	Description	Amount (₹)
1	Event Management	7,33,602
2	Food	5,79,348
3	Printing & Stationery Expense	3,90,510
4	Transportation	3,89,987
5	Other & GST	3,72,490
Balance		1,29,063
Total		25,95,000



हरिशंकर गोयल “श्री हरि”

सेवानिवृत्त
आर.ए.एस.



विनी के रिश्ते की बात चल रही थी। विनी बहुत सुंदर थी और उसने बी.टेक कर लिया था। उसकी शादी के कई प्रस्ताव आये हुए थे। एक दिन उनके किसी रिश्तेदार ने एक फोटो और बायोडाटा भेजा। फोटो इतना शानदार था कि विनी उस पर रीझ गई। बायोडाटा देखा तो पता चला कि मानव, सेना में मेजर है और उसके पिता ब्रिगेडियर। उसकी मम्मी प्रोफेसर।

प्रस्ताव सबको जंच रहा था लेकिन अड़चन एक ही थी कि मानव सेना में अफसर है। सेना में नौकरी के दौरान कभी भी कुछ भी हो सकता है। विनी ने तो जब से मानव का फोटो देखा था, उसी दिन से वह उसकी हो गई थी। जब विनी से उसकी राय पूछी गई तो उसने कहा : जीवन में जो मिलना होता है, वह मिल जाता है और उतना ही मिलता है जितना मुकद्दर में होता है। सेना में काम करने वाले सभी लोग तो शहीद नहीं होते? और यदि मेरे मुकद्दर में विधवा होना लिखा ही है तो आजकल तो दुर्घटनाएं भी बहुत होती हैं, उनसे भी मैं विधवा हो सकती हूं। सेना के अधिकारियों की जिंदगी एक अलग ही होती है अतः मुझे तो इसमें कोई समस्या नजर नहीं आती है।

अब तो अन्य किसी की आपत्तियों का कोई अर्थ ही नहीं रह गया था। शीघ्र ही दोनों का विवाह हो गया। हनीमून पर पूरा फ्रांस और ब्रिटेन घूम कर आये थे दोनों। विनी को ऐसा लगा कि इन दो महीनों में ही उसने अपनी सारी जिंदगी जी ली थी। मानव इतना हंसमुख स्वभाव का होगा, यह उसने कल्पना भी नहीं की थी। विनी तो उसकी भक्त बन गई थी। एक मिनट की भी जुदाई सहन नहीं कर पाती थी वह। कभी कभी तो उसकी मम्मी उसे छेड़ते हुए कहती कि हमने तुझे पच्चीस वर्ष प्यार दुलार दिया वो सब चंद दिनों में ही खत्म हो जायेगा, यह नहीं सोचा था। लेकिन साथ में ही वो यह भी कह देती थी कि इससे अच्छी बात और किसी मम्मी के लिए क्या होगी कि उसकी बेटी अपनी ससुराल में इतने आनंद से रह रही है कि उसे मायके आने में भी जोर आता है। भगवान ऐसा ससुराल हर लड़की को दें।

विनी की शादी को पांच साल हो गए थे। इसी बीच विनी के एक बेटे हुई। विनी उसका नाम मानव के नाम पर मानवी रखना

चाहती थी लेकिन मानव जिद पर अड़ गया कि बिटिया का नाम मम्मी यानी विनी के नाम पर रखा जाएगा। और उसका नाम रखा गया विनिता।

मानव की पोस्टिंग कारगिल में हो गई। एक बार तो विनी का दिल धड़का लेकिन उसने सोचा कि यह तो काम का हिस्सा है। कभी कारगिल तो कभी सियाचिन। कहीं भी हो सकती है मानव की पोस्टिंग। उसने एक झटके में बुरे खयाल दिल से निकाल दिये।

कारगिल में ड्यूटी जॉइन करने के बाद जब मानव घर आया तो वह उससे ऐसे लिपट गई जैसे कोई बेल किसी पेड़ से लिपट जाती है। पूरे एक महीने रहा था मानव इस बार। मानव ने उसे समझाया कि कारगिल में आतंकी हमले होते ही रहते हैं। भगवान ना करे कल को उसे कुछ हो जाए तो ...

विनी ने उसके होंठों पर अपना हाथ रख दिया और उसको आगे कुछ भी कहने से रोक दिया। मानव ने जबरन उसका हाथ हटाकर दो बातें कही और उन पर उससे वचन मांगे।

एक, उसकी शहादत पर वह आंसू नहीं बहायेगी।

दो, उसकी शहादत के बाद वह शादी करेगी।

विनी ने केवल पहली बात पर ही वचन दिया। दूसरी को सिरे से नकार दिया। दोनों में खूब वाक् युद्ध हुआ पहली बार। पर जीत विनी की हुई। मानव वापस कारगिल चला गया।

इस बार विनी का दिल रह-रह कर धड़क रहा था। रात में भी कई बार उसकी नींद खुल जाती थी। जब भी नींद खुलती, वह अपनी नन्ही सी बेटी विनिता को अपनी बांहों में कस लेती और उसमें वह मानव का प्रतिबिंब देखती थी। अब वह अपनी सास और ससुर का भी पूरा ध्यान रखने लगी थी। उसकी सास भी कभी कभी कह देती थी कि तू तो अब मेरी सास की तरह मेरा ध्यान रखने लगी है। विनी आश्चर्य से पूछती कि पुराने जमाने में तो सास अपनी बहुओं को बहुत प्रताड़ित करती थीं फिर आपकी सास कैसे ये सब कर लेती थी। तो सास कहती कि मेरी सास कहती थी कि मेरा बेटा फौज में है और तूने यह जानकर भी मेरे बेटे को पसंद किया है, ये कोई छोटी बात नहीं है। बस, तेरी इसी बात ने मेरा मन

जीत लिया और अब तेरा ध्यान रखना मेरी जिम्मेदारी है। विनी सास बहू का ऐसा प्रेम देखकर दंग रह गई।

दिन बड़ी तेजी से गुजर रहे थे कि एक दिन वह खबर आ गई जिसे कोई नहीं चाहता था। आतंकवादियों ने सेना के बेस कैम्प पर रात में हमला कर दिया। मानव अलग भवन में था लेकिन आतंकवादियों से मुकाबला करने उधर आ गया था। छः आतंकवादी थे। मानव के साथ एक लेफ्टिनेंट भी था। दोनों ने बहादुरी दिखाते हुए उनका सामना किया और उनको नेस्तनाबूद कर दिया। मरते मरते एक आतंकी ने एक बम उनकी ओर उछाल दिया। मानव ने अपने लेफ्टिनेंट को धक्का देकर दूर कर दिया और खुद ने उस बम को जूते की ठोकर से किक मारकर परे फेंक दिया लेकिन इसी बीच वह फट गया। मानव की उस टांग के परखवे उड़ गए और वह वहीं शहीद हो गया।

जब यह दुखद समाचार घर पहुंचा तो मानव की मां बेहोश हो गई। पापा ने एंबुलेंस बुलवा ली। विनी पर तो जैसे दुखों का पहाड़ टूट पड़ा। उसकी रुलाई आने वाली थी कि उसे अपना वह वादा याद आ गया जो उसने मानव को किया था कि वह रोएंगी नहीं। उसने बड़ी हिम्मत करके खुद को संभाला और विनिता को

अपनी बाहों में कस कर मानव का अहसास करती रही। इससे उसे बड़ा साहस मिला और अब उसने अपनी सास को भी संभाल लिया। इतने में विनी के मम्मी पापा भी आ गये और विनी की बहादुरी देखकर दंग रह गए। अब घर में एक भी सदस्य के आंसू नहीं आ रहे थे। मानव की शहादत का सम्मान करना ही उन सबका उद्देश्य रह गया था।

अगले दिन मानव का पार्थिव शरीर आ पहुंचा। विनी ने मानव के मुख को देखा और एकटक देखती रह गई। उसने अपने होंठ मानव के होंठों पर रखे और उसे महाप्रयाण की इजाजत दे दी। अंतिम संस्कार नन्ही विनिता के हाथों से कराया गया।

नेपथ्य में जोर जोर से नारे गूंज रहे थे।

जब तक सूरज चांद रहेगा

मानव तेरा नाम रहेगा।

इस घटना के कई साल बाद मानव के मम्मी पापा और विनी के मम्मी पापा ने विनी को दूसरी शादी के लिए बहुत कहा, मनाया लेकिन वह टस से मस नहीं हुई। विनिता को भी सेना में अफसर बनाने का एकमात्र उद्देश्य रह गया था उसका। बस, उसी उद्देश्य के लिए वह समर्पित हो गई।



**शहीदों की चिताओं पर लगेगे हर बरस मेले
वतन में मरने वालों का यही बाकी निशां होगा।**



आरएएस क्लब में सजी अनोखी साहित्यिक शाम



प्रतीक सैनी
(फ्रीलांसर जर्नलिस्ट)



यह बात है एक ऐसी शाम की जिसकी साक्षी सिने जगत की दो नामचीन हस्तियां बनीं। राजस्थान की वैभव नगरी जयपुर में अद्भुत वैभव समेटे आरएएस क्लब में 19 दिसंबर, 2022 की शाम जब मैंने कदम रखा तो एक अलग ही माहौल में खुद को पाया। सुश्री प्रियंका जोधावत, (अतिरिक्त महानिदेशक, जवाहर कला केंद्र) की किताब 'कुछ दिल ने कहा...अहसासों की कायनात' के विमोचन कार्यक्रम में आने का अवसर मुझे मिला। यह सुनहरा अवसर था उस किताब से मिलने का जिसमें बड़े आकर्षक ढंग से प्रियंका जी ने साहित्य, सिनेमा और गीतों से जुड़े अपने दिली अहसासों को एक सूत्र में पिरोया है।

मानों सपना हुआ साकार...

इसी अहसास से हर कोई रूबरू हो सके इसलिए खास सेशन 'अहसासों की अभिव्यक्ति' भी रखा गया। प्रसिद्ध अभिनेता पीयूष मिश्रा और गीतकार राजशेखर ने इस साहित्यिक अनुष्ठान में अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। किसी भी कार्यक्रम में अक्सर शुरुआती लम्हों में आयोजक बड़ी ऊहापोह में रहता है, अंतिम समय तक व्यवस्थाएं ही होती रहती हैं लेकिन समय से पूर्व ही यहां सब कुछ व्यवस्थित दिखा। यह मजबूत मैनेजमेंट को दर्शाता है। प्रियंका जी का पूरा परिवार यहां मौजूद था, सभी की आंखों में एक अलग सी खुशी दिखाई दी, यह सभी के लिए सपना साकार होने जैसा था। आरएएस एसोसिएशन ने ऐसी महती भूमिका इस कार्यक्रम में निभाई जिससे आयोजन 20 ना होकर 21 के आंकड़े

को छू गया। एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री गौरव बजाड़ ने इस मौके पर हर्ष जाहिर किया, उन्होंने हर कदम पर प्रशासनिक जिम्मेदारी निभाते हुए अपनी जिंदादिली और हुनर को जिंदा रखने के प्रियंका के प्रयासों की सराहना की व उन्हें उज्ज्वल भविष्य की शुभकामना दी।

इन्होंने बढ़ाई शोभा...

कार्यक्रम में अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक डॉ. रवि प्रकाश मेहरडा, आईएस पवन अरोड़ा, आईएस उर्मिला राजोरिया, पूर्व आईएस राजेंद्र भाणावत, दूरदर्शन एडीजी सतीश देपाल – शशि देपाल, रविंद्र जोधावत, पंकज ओझा, शाहीन अली, सुनील भाटी, सुनीता मीणा, फारूक आफरीदी विशेष अधिकारी मुख्यमंत्री, राजस्थान पत्रिका के स्टेट हैड अमित वाजपेयी, कला मर्मज्ञ केसी मालू, साहित्यकार अशोक राही, कवि संपत सरल, किशोर कुमार, अरुण हसीजा राजनारायण शर्मा, प्रवीण प्रधान, सतवीर यादव, निमीषा गुप्ता, राजेश गुप्ता, सरिता बडगुजर, ताराचंद सहारण, सुरेश बुनकर, दिनेश शर्मा समेत मीडिया बंधु व अन्य प्रबुद्ध जनों ने हिस्सा लिया।

संवादों का सिलसिला...

किताब और प्रियंका दोनों के बारे में कहने वालों की फेहरिस्त लंबी है पर दो जनों को मैं सुन पाया। सीमा जोधावत, ये प्रियंका जी की हमजोली भी है, सहेली भी और इत्तेफाक से बड़ी बहन भी। उन्होंने कहा, 'किताब का हर आलेख एक बहती नदी





सा है जहां गीतों के सुंदर मुखड़े और अंतरे भी अपने कल कल स्वर के साथ मंद गति से बहते हुए सहज भाव से आ मिलते हैं।' वहीं हनुमानगढ़ से पधारे भरत ओला ने कहा कि 'किताब में मौजूद आलेखों में साहित्य, सिनेमा और गीतों की त्रिवेणी बहती नजर आती है जो हृदय की गहराइयों में उतरती है। लेखिका के हर श्वांस में साहित्य, सिनेमा और गीत बसे हैं पाठक भी इस त्रिवेणी में स्नान कर बाग-बाग हुए जाता है।' एक संवाद और है जिसका जिक्र जरूरी है, वह प्रियंका जी की बिटिया सिद्धांगना का। मां के संघर्षों और उनके प्रेम को सिद्धांगना ने बयां किया, इस प्रेम को केवल महसूस किया जा सकता है लिपिबद्ध नहीं।

जब तक हम हैं, जिंदा रहेगा साहित्य: राजशेखर

यकायक महफिल में एंट्री होती है पीयूष मिश्रा और राजशेखर की। दोनों सिने सितारों ने बॉलीवुड की चमक को महफिल में न आने दिया, बतौर साहित्यकार ही वे इसका हिस्सा बने। पोस्टर से पर्दा उठा, किताब का विमोचन हुआ और फिर शुरू हुआ अहसासों की अभिव्यक्ति का सिलसिला। मंच पर कई बातें हुईं, फुर्सत में राजशेखर से बात की तो उन्होंने कहा कि 'यह बहुत ईमानदारी से लिखी गयी अच्छी और अलग तरह की किताब है। कुछ दिल ने कहा सीधी दिल तक पहुंचती है। दिल की सुनिए, किताब से जुड़िए, जब तक हम जिंदा हैं साहित्य भी जिंदा रहेगा।' पीयूष मिश्रा ने किताब के कुछ अध्यायों को मंच पर पढ़ा और कहा कि व्यस्तता से पीछा छुड़ाकर वो एक बार फिर इस किताब

के पीछे पड़ेंगे। दोनों ने ही साहित्य, सिनेमा, संगीत पर चर्चा की और वहां मौजूद लोगों से भी मुखातिब हुए।

'यह पन्ने हैं जिसके, जो हैं यह रोशनाई भी'

अब बात करे उस शख्सियत की जिसके भावों की रोशनाई (स्याही) से ये पन्ने लिखे गए हैं। प्रियंका जोधावत, मूलतः नागौर के भड़सियां गांव की निवासी हैं, उनके पिता श्री डी. आर. जोधावत सेवानिवृत्त आईएएस और माता श्रीमती संपत जोधावत हैं। 2001 में मात्र 22 वर्ष की उम्र में प्रियंका ने राजस्थान प्रशासनिक सेवा की परीक्षा उत्तीर्ण कर कीर्तिमान स्थापित किया। प्रियंका ने अजमेर, उदयपुर, चित्तौड़गढ़ में विभिन्न अहम प्रशासनिक पदों की जिम्मेदारी निभाई है। प्रशासनिक व्यस्तता के बीच समय निकालकर कैसे अपने मन को जीवंत रखा जाए यह प्रियंका जी ने साबित कर दिया है।



मेरे अनुभव...

कुछ दिल ने कहा...अहसासों की कायनात' पढ़कर मैंने जाना कि फिल्मों को किस तरह देखा जाता है और गीतों को कैसे सुनते हैं, साथ ही यह भी पता चला कि साहित्य के सहयोग से कैसे अहसासों की कायनात का ताना-बाना बुना जाता है। बतौर लेखिका प्रियंका जी को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं के साथ मैं अपनी कलम को अभी विराम देता हूं।

“अपने प्रयोजन में दृढ़ विश्वास रखने वाला एक सूक्ष्म शरीर इतिहास के रुख को बदल सकता है।”

-महात्मा गाँधी



RAS Club Witnessed A Workshop on Calligraphy



Mrs. Arshdeep Brar
S.D.M., Amer



Calligraphy is the art of beautiful writing. It is a skill of writing artistically using specific strokes and tools, in a rhythmic and harmonious way. Hence, Calligraphy is a combination of both creativity and technique.

When we practise calligraphy our mind and body are both engaged which makes it a very relaxing art-form. The experience of creating beautiful strokes on paper, makes one feel joyful and elated. Research shows that putting pen to paper can help improve memory, brain function and improve advanced small motor skills.

The RAS Club, Jaipur, arranged a two days workshop on Brushpen Calligraphy, by calligraphy and engraving artist Kanika Sachdeva, on 4th and 5th June, 2022.

The workshop was inaugurated by Calligraphy kits including all the materials and worksheets required to learn the art form were provided at the event.

The learning began with discussion about the basics of calligraphy- how to hold the brushpen, correct posture and how to place the paper and pen while writing. The students learnt and practised how to make basic strokes, how to write lowercase letters, uppercase letters and how to join letters to form words in brushpen calligraphy. Each participant created a final project, writing a quote of his/her choice in brushpen calligraphy.

In this event 40 club members of different age groups - school students, college students, working professionals and artists learnt the beautiful art of calligraphy.

The workshop was successfully organised with the constant support of RAS Arshdeep Brar. The vote of thanks was given by President RASA Shri Gaurav Bajad and certificates of participation were felicitated to all the workshop attendees followed by high tea. The program ended successfully with the active participation of the RAS club members.















राजस्थान प्रशासनिक सेवा परिषद्

2, संस्थानिक क्षेत्र, दैनिक भास्कर कार्यालय के पास, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर – 302017 फोन – 2703695

गौरव बजाड़
अध्यक्ष

अजय असवाल
कार्यकारी अध्यक्ष

प्रवीण कुमार
महासचिव

क्रमांक : RAS/2022-23/—

दिनांक: / /2022

माननीय मुख्यमंत्री महोदय,
राजस्थान सरकार, जयपुर।

विषय:- राजस्थान प्रशासनिक सेवा के लम्बित मुद्दों के निस्तारण करवाने के सम्बन्ध में।

महोदय,

उपरोक्त विषयान्तर्गत अनुरोध है कि राजस्थान प्रशासनिक सेवा के अधिकारी राज्य सरकार की नीतियों एवं निर्णयों के क्रियान्वयन हेतु जमीनी स्तर पर राज्य सरकार के दिशा-निर्देशानुसार सतत् रूप से कार्य करते रहते हैं। हाल ही में कोविड महामारी के दौरान राजस्थान प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों द्वारा ऑक्सीजन प्रबन्धन, हॉस्पिटल प्रबन्धन इत्यादि कार्यों को सम्पन्न किया गया जिससे राज्य के प्रशासनिक प्रबन्धन की सराहना जनता एवं जनप्रतिनिधियों द्वारा की गई है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में राजस्थान प्रशासनिक सेवा की तुलना अन्य राज्यों की प्रशासनिक सेवाओं से करने पर यह स्पष्ट है कि अन्य राज्यों की प्रशासनिक सेवाएँ, राजस्थान प्रशासनिक सेवाओं से अधिक सुदृढ़ हैं तथा अन्य राज्यों में राज्य प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों को बेहतर पदोन्नति चैनल मिले हुए हैं।

राजस्थान प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों हेतु श्रीमान द्वारा पूर्व में लिये गये उत्तम निर्णयों की निरन्तरता में निवेदन है कि राजस्थान प्रशासनिक सेवा को सुदृढ़ करने हेतु निम्नानुसार बिन्दुओं का समाधान करवाये जाने के निर्देश प्रदान कराने का श्रम करावे:-

- वर्तमान में राजस्थान प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों को 5 पदोन्नति चैनल उपलब्ध हैं अन्य राज्यों यथा- उत्तर प्रदेश, पंजाब, सिक्किम आदि में राज्य प्रशासनिक सेवाओं हेतु 7 पदोन्नति चैनल निर्धारित है। उक्त सम्बन्ध में निवेदन है कि राजस्थान प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों के लिये एक 'अपेक्स स्केल' का सृजन किये जाने हेतु विशेष अनुरोध है जिससे अन्य राज्यों की भाँति राज्य सेवा के अधिकारियों को भी उचित पदोन्नति लाभ प्राप्त हो सकें तथा जो अधिकारी भारतीय प्रशासनिक सेवा में पदोन्नति से वंचित रह जाते हैं उन्हें भी सम्मानजनक पद एवं वेतन मिल सके। राज्य की अन्य सेवाओं यथा सार्वजनिक निर्माण विभाग, जल संसाधन विभाग, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, कॉलेज शिक्षा विभाग, स्वास्थ्य शिक्षा विभाग एवं खनिज विभाग में मुख्य अभियंता, मुख्य वास्तुविद, निदेशक, वरिष्ठ प्रोफेसर, मुख्य नगर नियोजक जैसे कई अधिकारियों को पूर्व में अनुमत पे-लेवल 24 ग्रेड-पे 10000 को ध्यान में रखते हुए राजस्थान प्रशासनिक सेवा में भी उत्तर प्रदेश की तर्ज पर एक Apex Scale सृजित कर पे-लेवल 24 (ग्रेड-पे 10000) निर्धारित की जायें।

2. वर्तमान में राजस्थान प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों की हायर सुपरटाइम स्केल व सुपरटाइम स्केल में क्रमशः 15 व 62 पद रिक्त हैं। उक्त रिक्त पदों को भरने हेतु वर्तमान नियमों में एक बारीय शिथिलता (One time relaxation) प्रदान करने हेतु निर्देश प्रदान करवाया जावे। इसी प्रकार चयनित वेतन स्केल में भी एक बारीय शिथिलता (One time relaxation) प्रदान कर रिक्त पदों के विरुद्ध पदोन्नति करवाने के आदेश जारी करावें। हायर सुपर टाईम स्केल में सीमा को 3% से 5% करते हुए रिलेक्सेसन प्रदान किया जावे।
3. राजस्थान प्रशासनिक सेवा में नियमित रूप से भर्ती नहीं होने के कारण तथा विभिन्न कैडर में पदोन्नति हेतु न्यूनतम अनिवार्य सेवा अनुभव/अवधि की बाध्यता होने के कारण कुछ बैच के अधिकारियों को पदोन्नति में अत्यधिक हानि की स्थिति हो जाती है। इस हेतु विभिन्न स्केल में पदोन्नति हेतु न्यूनतम अनुभव/अवधि निम्नानुसार प्रस्तावित है-

एपेक्स स्केल	-	25 वर्ष
हायर सुपरटाइम स्केल	-	20 वर्ष
सुपर टाइम स्केल	-	15 वर्ष
4. उपखण्ड कार्यालयों को सशक्त बनाया जाना:- इन कार्यालयों के सुगम संचालन हेतु निम्नानुसार निर्णय लिए जाने हेतु निवेदन है:-
 - ☐ उपखण्ड अधिकारियों हेतु गनमैन (PSO) उपलब्ध करवाया जाना।
 - ☐ SDO एवं AC&EM कार्यालयों में नायब तहसीलदार के रिक्त पदों को भरा जाना।
 - ☐ उपखण्ड कार्यालय में सूचना सहायक एवं अतिरिक्त लिपिक पदों को तत्काल भरवाया जाना।
 - ☐ SDO एवं AC&EM को न्यायिक कार्यों को गुणवत्ता पूर्वक सम्पन्न करने हेतु प्रशिक्षित रीडर तथा स्टेनो उपलब्ध कराया जाए।
 - ☐ कई उपखण्ड पर आवास जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है, जहां नवीन आवास या मरम्मत की आवश्यकता है। इस हेतु आवश्यक बजट आवंटित किये जाने का निवेदन है।
 - ☐ उपखण्ड अधिकारी/संवर्ग के सभी RAS अधिकारी के स्थानान्तरण बहुत अधिक संख्या में होते हैं। प्रत्येक स्थानान्तरण पर सारा घरेलू सामान लाना ले जाना पड़ता है। यदि प्रत्येक उपखण्ड अधिकारी के आवास पर न्यूनतम रहवास व्यवस्था सुनिश्चित की जाए तो अनावश्यक परेशानी का समाधान हो सकता है। इस हेतु प्रत्येक उपखण्ड पर 1 से 2 लाख रुपये बजट पर्याप्त है।
 - ☐ Minor Acts के अधिकार एसीईएम एवं एसडीएम को दिये जाये।
 - ☐ शहरी क्षेत्रों में नगरपालिका एवं नगर परिषदों में भू-संपरिवर्तन अधिकार पूर्व की भांति SDO को दिया जाये एवं पुलिस कमिश्नरेट क्षेत्र में SDM की भूमिका को स्पष्ट किया जाये।
5. राजस्थान प्रशासनिक सेवा का कैडर रिव्यू जो काफी समय से लम्बित है। राजस्थान प्रशासनिक सेवा का पृथक से कोई विभाग नहीं है, प्रशासनिक प्रबंधन के लिए सभी विभागों में राजस्थान प्रशासनिक सेवा के पद सृजित किए गए हैं। कुछ समय से सभी विभागों के अधिकारियों द्वारा अपने विभागों में से राजस्थान प्रशासनिक सेवा के पदों को समाप्त किया जा रहा है। हाल ही में राजस्थान प्रशासनिक सेवा के अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी के 26 पद विकास अधिकारियों को प्रदान किये गये हैं। उक्त के संबंध में तत्समय दिये गये आश्वासन की क्रियान्विति हेतु अन्य विभागों के निम्नानुसार पद राजस्थान प्रशासनिक सेवा परिषद के कैडर में जोड़े जाये।
 - a. निदेशक, माप एवं तोल, उपभोक्ता मामलात, पंचायती राज, कृषि, बॉयोफ्यूल, पशुपालन, मतस्य, उद्यानिकी, जल ग्रहण क्षेत्र विकास परियोजना, सार्वजनिक निर्माण विभाग, जन स्वा. अभियान्त्रिकी एवं सिंचाई विभाग
 - b. क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी, जयपुर द्वितीय
 - c. उपायुक्त, राजस्थान आवासन मण्डल - समस्त पद
6. राज्य प्रशासनिक सेवा के संस्थापन प्रबंधन के संबंध में :- जिस प्रकार राजस्थान लेखा सेवा में संस्थापन प्रबंधन का कार्य उनकी सेवा के ही संयुक्त सचिव द्वारा किया जाता है उसी प्रकार राजस्थान प्रशासनिक सेवा के संस्थापन का प्रबंधन भी किसी

वरिष्ठ राजस्थान प्रशासनिक सेवा के अधिकारी द्वारा किया जाना चाहिए। उल्लेखनीय है कि वर्तमान में भारतीय प्रशासनिक सेवा के संयुक्त सचिव (कार्मिक-क/1) यह कार्य संपादित कर रहे हैं जिनके पास अखिल भारतीय सेवाओं तथा सचिवालय सेवाओं के अधिकारियों के संस्थापन प्रबंधन का अत्यधिक भार है। अतः राज्य प्रशासनिक सेवाओं के संस्थापन प्रबंधन हेतु पृथक से राजस्थान प्रशासनिक सेवा का संयुक्त सचिव का पद सृजित किया जाना चाहिए।

7. राज्य प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों के निलम्बन अवधि को रिव्यू किया जाए – वर्तमान में राज्य सेवा के अधिकारियों के निलम्बन हेतु कार्मिक विभाग द्वारा जारी परिपत्र दिनांक 07.07.2010 के अनुसार कार्यवाही की जाती है। इस क्रम में निवेदन है कि अखिल भारतीय सेवा के प्रावधानानुसार ही राज्य सेवा के प्रावधानों को शीघ्र रिव्यू किया जावे ताकि अनावश्यक रूप से इस आधार पर वादकरण की स्थिति समाप्त हो सके। सी.सी.ए. नियम 1958 के नियम 13(05) में यह प्रावधित है कि निलम्बन का आदेश सक्षम प्राधिकारी द्वारा किसी भी समय Revoke किया जा सकता है। केन्द्र सरकार द्वारा दिनांक 21.12.15 को नियम 03 (08) में संशोधन कर पूर्व में प्रावधित निलम्बन की प्रथम रिव्यू की लिमिट को 90 दिवस के स्थान पर 60 दिवस तथा पश्चात्पूर्वी रिव्यू समय सीमा को 180 दिवस के स्थान पर 120 दिवस निर्धारित किया गया है। इसी प्रकार राज्य प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों के निलम्बन अवधि को रिव्यू किया जाए।

अतः उपरोक्त सम्बन्ध में विनम्र अनुरोध है कि राजस्थान प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों की लम्बे समय से लम्बित इन मांगों पर श्रीमान द्वारा सकारात्मक निर्णय लिया जाकर निस्तारण करवाया जावे जिससे राजस्थान प्रशासनिक सेवा के सभी अधिकारीगण एक नयी ऊर्जा व उत्साह के साथ राज्य सरकार की महत्वाकांक्षी योजनाओं को पूर्ण मनोयोग के साथ क्रियान्वित करवाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर सकेंगे।

अध्यक्ष

राजस्थान प्रशासनिक सेवा परिषद्



जवाई बांध, पाली



राजस्थान प्रशासनिक सेवा परिषद्

क्रमांक:- राप्रसेप/2022-23/

दिनांक:- 13.02.2023

माननीय मुख्यमंत्री महोदय,
राजस्थान सरकार, जयपुर।

विषय:- राजस्थान प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों हेतु Apex Scale – 10,000 की घोषणा के सम्बन्ध में।
महोदय,

उपरोक्त विषयान्तर्गत निवेदन है कि पूर्व में श्रीमान् द्वारा राजस्थान प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों के हित में बहुत सारी घोषणाएँ RAS कैडर को मजबूती प्रदान करने हेतु की गयी हैं।

श्रीमान् को पूर्व में प्रस्तुत संलग्न ज्ञापन में विशेष रूप से RAS अधिकारियों को अपेक्स स्केल दिये जाने की एक ही मांग विशेष रूप से की गयी थी। उक्त सम्बन्ध में निवेदन है कि जो RAS अधिकारी IAS में पदोन्नत हो जाते हैं, शेष IAS में पदोन्नति से किसी भी कारणवश वंचित रहे उन अधिकारियों को Apex Scale मिलने पर मन में एक संतोष रहेगा कि उन्हें IAS में पदोन्नति तो नहीं मिल पायी परन्तु Apex Scale मिल गयी। वर्तमान में प्रदत्त हायर सुपरटाईम स्केल – 9500 एवं मांग की जाने वाली अपेक्स स्केल – 10,000 में केवल 500 का ही अन्तर है। इस अन्तर से राज्य सरकार पर कोई विशेष वित्तीय भार भी नहीं आयेगा।

यह उल्लेखनीय है कि यह मांग केवल राजस्थान में ही प्रथम बार नहीं की गयी है। RAS एसोसिएशन द्वारा 7 अन्य राज्यों जहाँ वर्तमान में अपेक्स स्केल दी जा रही है वहाँ की सूची (आदेशों सहित) प्रस्तुत की गयी थी। **संलग्न : पताका 'अ'**

उपरोक्त सम्बन्ध में यह भी उल्लेखनीय है कि राज्य में ही अन्य सेवाओं यथा सार्वजनिक निर्माण विभाग, जल संसाधन विभाग, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, कॉलेज शिक्षा विभाग, स्वास्थ्य शिक्षा विभाग व खनिज विभाग में मुख्य अभियन्ता, मुख्य वास्तुविद, निदेशक, वरिष्ठ प्रोफेसर, मुख्य नगर नियोजक जैसे कई अधिकारियों को वर्तमान में पे-लेवल 24 ग्रेड-पे 10,000 दी जा रही है।

श्रीमान् द्वारा विशेष तौर पर ACS-Finance महोदय को निर्देशित किये जाने के बाद भी RAS अधिकारियों हेतु बजट में किसी भी प्रकार की घोषणा नहीं होना अत्यन्त ही दुःखद है। बहुत संकोच के साथ नहीं चाहते हुए भी लिखना पड़ रहा है कि यदि यह औचित्यपूर्ण मांग श्रीमान् के समय में ही पूरी नहीं हो सकेगी तो भविष्य में तो कभी भी पूरी नहीं हो पायेगी।

वर्तमान में श्रीमान् द्वारा नये ADM, SDM तहसील कार्यालय तो खोल दिये गये हैं, परन्तु उनमें प्रशासनिक कार्य को सम्पादित करने के लिये विभिन्न कर्मचारियों के पदों को भरे जाने की एवं आवास हेतु बजट स्वीकृत की पत्रावली राजस्व विभाग में लम्बित है।

अतः सभी RAS अधिकारीगण विनम्र अनुरोध करते हैं कि

1. अपेक्स स्केल 10,000 दिये जाने की स्वीकृति प्रदान करवायें।
2. सभी नये ADM, SDM के कार्यालयों हेतु विभिन्न पदों की स्वीकृति एवं नये आवास भवन हेतु बजट की स्वीकृति प्रदान करवायें।

अध्यक्ष
राज. प्रशासनिक सेवा परिषद्



राजस्थान प्रशासनिक सेवा परिषद्

माननीय मुख्यमंत्री महोदय,
राजस्थान सरकार, जयपुर।

विषय:- RAS कैडर के पद पर अन्य सेवा के अधिकारियों का पदस्थापन/स्थानान्तरण नहीं किये जाने के संबंध में।
महोदय,

उपरोक्त विषय में विनम्र निवेदन है कि स्वायत्त शासन विभाग द्वारा दिनांक 29.09.2022 को उपायुक्त, विकास प्राधिकरण, जोधपुर के पद पर श्री श्रवण कुमार का स्थानान्तरण/पदस्थापन किया गया है।

श्री श्रवण कुमार राजस्थान नगर निकाय सेवा के अधिकारी हैं, जबकि उपायुक्त, विकास प्राधिकरण, जोधपुर राजस्थान प्रशासनिक सेवा कैडर का पद है। राजस्थान प्रशासनिक सेवा कैडर के पद पर अन्य सेवा के अधिकारियों का स्थानान्तरण/पदस्थापन किया जाना पूर्णतः नियम विरुद्ध होकर उचित नहीं है। उक्त आदेश से राजस्थान प्रशासनिक सेवा की गरिमा को ठेस पहुंची है जिससे राजस्थान प्रशासनिक सेवा के पूरे कैडर में असंतोष व रोष व्याप्त हुआ है। अतः इस आदेश को आवश्यक रूप से निरस्त करवाया जाना उचित होगा।

- ❑ वर्तमान में RAS कैडर के पदों पर IAS व अन्य सेवाओं के अधिकारीगण पदस्थापित हैं। उनके स्थान पर RAS अधिकारियों को पदस्थापित करवाया जावे एवं भविष्य में भी RAS कैडर पद पर अन्य सेवा के अधिकारियों का पदस्थापन/स्थानान्तरण नहीं किये जाने के निर्देश प्रदान किये जावें।
- ❑ विगत कई वर्षों में RMS सेवा के अधिकारियों की पदोन्नति सेवा नियमों में एक से अधिक बार शिथिलन प्रदान कर की गई है जो कि पूर्णतः नियम विरुद्ध है। वर्ष 2008 में भर्ती हुए RMS अधिकारियों को वर्ष 2020 तक मात्र 12 वर्ष में ही चार प्रमोशन दिये गये हैं जो कि अन्य सेवाओं की तुलना में काफी अधिक है। अतः RMS सेवा के अधिकारियों को प्रदत्त प्रमोशन को सेवा नियमों के अनुसार Review करवाने की कार्यवाही की जावे।

अतः उपरोक्त बिन्दुओं के सम्बन्ध में नम्र निवेदन है कि यथाशीघ्र विधिसम्मत निर्णय करवाने की कृपा करावें। राजस्थान प्रशासनिक सेवा परिषद् श्रीमान का सदैव आभारी रहेगा अन्यथा व्यथित होकर सामुहिक अवकाश लेने पर विवश होना पड़ेगा जिसका राजस्थान प्रशासनिक सेवा परिषद् को हमेशा खेद रहेगा।

समस्त अधिकारीगण
राजस्थान प्रशासनिक सेवा परिषद्



राजस्थान प्रशासनिक सेवा परिषद्

प्रमुख सचिव मुख्यमंत्री,
राजस्थान सरकार, जयपुर।

विषय:- RAS कैडर के पदों पर केवल RAS अधिकारी का ही पदस्थापन करवाये जाने के संबंध में।
महोदय,

उपरोक्त विषय में विनम्र अनुरोध है कि वर्तमान में RAS कैडर के पदों पर RAS अधिकारीगणों को पदस्थापित नहीं किया जा रहा है। पूर्व में संगठन के प्रयासों से जो RAS अधिकारीगण IAS में पदोन्नत नहीं हो पाते हैं उनके लिये कुछ पद निर्धारित किये गये थे। निम्न पदों पर वर्तमान में अन्य सेवाओं के अधिकारीगण पदस्थापित किये हुए हैं। उक्त पदों की सूची निम्नानुसार है -

1. Director, Local Bodies
2. Director, Fisheries
3. Director, Agriculture Marketing
4. Director, Archeology
5. Director, Civil Aviation
6. Director, Procurement, RMSC Ltd., Jaipur
7. Dy. Chief of Protocol
8. Director, Raj. State Service Delivery War Room, Finance (Treasury & Accounts)
9. Secretary, UIT Alwar

अतः अनुरोध है कि RAS कैडर के पदों पर केवल RAS अधिकारीगण का ही पदस्थापन करवाया जाने का श्रम करावें।

अध्यक्ष
राज. प्रशासनिक सेवा परिषद्



राजस्थान प्रशासनिक सेवा परिषद्

प्रमुख सचिव, मुख्यमंत्री
राजस्थान सरकार, जयपुर।

विषय :- राजस्थान प्रशासनिक सेवा के अधिकारीगणों को अनावश्यक रूप से निलम्बन के संबंध में।

महोदय,

राजस्थान प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों द्वारा राज्य सरकार की योजनाओं एवं नीतियों को सफल बनाने में कर्मठ योगदान दिया है गत कुछ वर्षों में राजस्थान प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों को बिना जाँच प्रक्रिया अपनाये सीधे ही निलम्बित किया जा रहा है। जिसमें प्रथम दृष्टया अधिकारियों की कोई गम्भीर गलती नहीं थी परन्तु मात्र छोटी-छोटी गलतियों के आधार पर बिना किसी जाँच के सीधे ही निलम्बित किया जाना अत्यन्त खेदजनक स्थिति है।

राज्य सरकार की नीतियों के क्रियान्वयन कार्य के दौरान छोटी-छोटी गलतियों की सम्भावना रहती है, मगर किसी कारण से यदि अधिकारी को पद से हटाना राज्य सरकार के लिए आवश्यक है तो उस अधिकारी को APO किया जा सकता है परन्तु जाँच प्रक्रिया अपनाये बिना निलम्बित किया जाना नैसर्गिक न्याय के सिद्धान्त के विरुद्ध है। इस प्रकार बिना जाँच प्रक्रिया अपनाये ही निलम्बन कार्यवाहियां निरन्तर घटित होने से आरएएस अधिकारी स्वयं को सुरक्षित, संरक्षित महसूस नहीं करेंगे तो राजकार्य भी प्रभावित होगा।

राज्य सरकार की नीतियों के क्रियान्वयन में भयभीत अधिकारी ठोस निर्णय लेने में संकोच करेगा। जिससे न केवल अधिकारियों की व्यक्तिगत छवि वरन् सम्पूर्ण आरएएस कैडर की छवि व राज्य सरकार की साख पर भी विपरीत प्रभाव पड़ेगा। वर्तमान निलम्बित अधिकारी को बहाल करने तथा इस सम्बन्ध में आवश्यक दिशा-निर्देश जारी करने का विशेष अनुरोध है।

भवदीय,

राज. प्रशासनिक सेवा के अधिकारीगण



राजस्थान प्रशासनिक सेवा परिषद्

माननीय मुख्यमंत्री महोदय

विषय:- राजस्थान प्रशासनिक सेवा, पुलिस सेवा एवं लेखा सेवा में अपेक्स स्केल सृजित कर पे-लेवल 24 (ग्रेड-पे 10,000) करवाये जाने के सम्बन्ध में।

महोदय,

वर्तमान में राजस्थान प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों को 5 पदोन्नति चैनल उपलब्ध हैं अन्य राज्यों यथा - उत्तर प्रदेश, पंजाब, मिजोरम आदि में राज्य प्रशासनिक सेवाओं हेतु 7 पदोन्नति चैनल निर्धारित है। उक्त सम्बन्ध में अनुरोध है कि राजस्थान प्रशासनिक सेवा, पुलिस सेवा एवं लेखा सेवा के वरिष्ठ अधिकारीगणों हेतु पे-स्केल में एक नयी अपेक्स स्केल का सृजन कर पे- L-24 (ग्रेड-पे 10,000) किया जावे। इस संबंध में उल्लेखनीय है कि राज्य की अन्य सेवाओं यथा सार्वजनिक निर्माण विभाग, जल संसाधन विभाग, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, कॉलेज शिक्षा विभाग, स्वास्थ्य शिक्षा विभाग एवं खनिज विभाग में मुख्य अभियंता, मुख्य वास्तुविद, निदेशक, वरिष्ठ प्रोफेसर, मुख्य नगर नियोजक जैसे कई अधिकारीगण को पूर्व में ही अनुमत पे-L-24 ग्रेड-पे 10000 को ध्यान में रखते हुए एक Apex Scale पे-L-24 (ग्रेड-पे 10000) पर सृजित की जावे।

इससे वह अधिकारीगण जो भारतीय प्रशासनिक सेवा में पदोन्नति से वंचित रह जाते हैं उन्हें सम्मानजनक पद एवं वेतन मिल सकेगा एवं अन्य राज्यों की भांति राज्य सेवा के अधिकारियों को भी उचित पदोन्नति लाभ प्राप्त हो सकेंगे।

विभिन्न राज्यों यथा उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, बिहार, नागालैण्ड, मिजोरम एवं पंजाब में राज्य प्रशासनिक सेवाओं हेतु लागू अपेक्स स्केल/पे-मेट्रिक्स की तालिका पताका 'अ' पर एवं नवीन अपेक्स स्केल पे-L-24 (ग्रेड-पे 10,000) के पदों को नोटिफाई करवाये जाने के लिये राजस्थान प्रशासनिक सेवा की सूची पताका 'ब', राज. पुलिस सेवा की पताका 'स' एवं राज. लेखा सेवा की पताका 'द' पर संलग्न है।

(राधेश्याम मीणा)

अध्यक्ष

राज. लेखा सेवा परिषद

(रघुवीर सैनी)

अध्यक्ष

राज. पुलिस सेवा परिषद

(गौरव बजाड़)

अध्यक्ष

राज. प्रशासनिक सेवा परिषद



White Towel And A Cup Of Tea



Kunal Rahar

SDM, Baseri (Dholpur)



I guess it goes without saying that prima facie what sets apart a Bureaucrat from others is a chair laden with white towel.

As I thought over this and tried to find out more about it, I noticed that the legacy has its origin from the British India just like the Civil Services. If you ever happen to be in a meeting room of Government servants and need to find who is the most important person in the room, you just need to find the chair with the biggest and brightest white towel on it and Bingo! there you are.

Infact most of the meetings are held in a conference room with U-shaped table. People who come to attend the meeting know on their own where to sit. The most important person who often chairs the meeting comes last and occupies the middle chair, which is usually the largest and has the brightest white towel on it. The ones on the left and right can have towels which are slightly smaller or less white, or of lesser quality, depending on who occupies the chair.

During the British era and even after Independence only class 1 officers used to get chairs with cushion, rest of the Govt servants would occupy wooden chairs with

plastic wire. Electricity was a luxury back then and power cuts were frequent, so the towels on the chairs would prevent the sweat from body and come handy to wipe off.

As for the color to be white, one wonders, the color of towel is white so that the officer may know if it is clean or its easier to wash the towels than to dry clean the Premium chairs of British era. Also to think of it, white color stands for purity. Whatever may be the reason but the practice is common across India irrespective of whether the place belonged to British India or erstwhile princely states.

The towels are made of soft and long cotton fibers unlike the Indian towel, or gamchha which is too thin to be able to absorb perspiration. Also, One would find these white towels covering the seats of official cars in a similar manner. As with the towels the best plate available with snacks (often dryfruits) and Tea served in a cup with coaster over it defines who presides over the meeting and who holds the importance.

All said and done, one needs to earn their piece of white clothing and a cup of tea with coaster over it.



“ज्ञान संकल्प” – अभिनव पहल बैरक में संचालित एक पुस्तकालय



चन्द्रशेखर भण्डारी
उपखण्ड अधिकारी, कुशलगढ़
जिला बांसवाड़ा



उपखण्ड मजिस्ट्रेट के दायित्वों की विविधता में एक दायित्व यह भी होता है कि उसे अपने कार्यक्षेत्र के कारागृह का निरीक्षण करना होता है और यह जाँचना होता है कि कारागृह में बन्दियों हेतु मानक अनुसार आवास, स्वच्छता, मनोरंजन, अतिआवश्यक वस्तुओं की उपलब्धता है या नहीं?

निम्बाहेडा, चित्तौड़गढ़ उपखण्ड मजिस्ट्रेट रहते हुए मैंने कई बार कारागृह का निरीक्षण किया एवं बन्दियों से बातचीत करने का अवसर भी मिला। बन्दियों से वार्तालाप के दौरान मुझे यह ज्ञात हुआ कि कुछ बन्दी सेकेण्डरी, हायर सेकेण्डरी एवं स्नातक उत्तीर्ण हैं, उनमें से कुछ प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी भी करना चाहते हैं। कुछ उम्रदराज बन्दियों में धार्मिक, नैतिक एवं लोक कथानकों के प्रति रूझान पाया गया।

जब कारापाल से बन्दियों की रूचि और खाली समय के उपयोग हेतु की जानेवाली गतिविधियों के बारे में जानकारी ली गयी तो मनोरंजन हेतु टेलीविजन का उपयोग करना बताया गया। तभी मेरे मस्तिष्क में यह विचार कौंधा कि क्यों न इन बन्दियों के लिए अध्ययन हेतु एक पुस्तकालय प्रारम्भ किया जाये ताकि न केवल खाली समय में वे धर्म, नीति, संस्कृति व चारित्रिक शिक्षा का ज्ञान प्राप्त कर सकें वरन् कारागृह में रहते हुए उनके मन में उत्पन्न निराशा, नकारात्मकता एवं जीवन जीने के प्रति क्षीण हो रही उत्कंठा को जीवंत रखा जा सके।

बस इसी विचार की परिणति के रूप में ‘ज्ञान संकल्प’

पुस्तकालय धरातल पर साकार हो उठा। हालांकि इस विचार के पश्चात् सबसे बड़ी चुनौती यह थी कि सीमित दायरे वाली छोटी सी जेल में क्या पुस्तकालय हेतु कोई स्थान मिल भी सकेगा? किन्तु मेरी प्रसन्नता का ठिकाना नहीं रहा जब मुझे यहाँ के कारापाल ने बताया कि अन्दर एक छोटी सी ‘बैरक’ है, जिसका उपयोग बन्दियों के लिए नहीं किया जा रहा है। उसी क्षण उस बैरक को पुस्तकालय कक्ष के रूप में चिन्हित कर लिया गया।

बन्दियों में मेरी इस घोषणा से एक उत्साह का माहौल बन गया था। मैंने बन्दियों से जब यह कहा कि वह अपनी पसन्द की पुस्तकों की सूची कारापाल को लिखवा सकते हैं तो अगले ही दिन मुझे एक लम्बी फेहरिस्त प्राप्त हो गयी जिसे जाँच कर कुछ अन्य पुस्तकें उसमें जोड़कर सूची को अद्यतन कर लिया गया। मैंने उदयपुर से 21 पुस्तकें स्वयं जा कर क्रय की और बसंत पंचमी के दिन शुभारम्भ हो गया ‘ज्ञान संकल्प पुस्तकालय’ का।

बैरक को सुसज्जित पुस्तकालय में बदलने हेतु हमने स्थानीय सीमेन्ट कम्पनी न्यूवोको से सी.एस.आर. के तहत मदद हेतु अनुरोध किया जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार करते हुए बैरक में रंग-रोगन, पुस्तकों हेतु अलमारी की व्यवस्था के साथ चुने हुए आदर्श वाक्य एवं महापुरुषों की तस्वीरें लगाकर उसे साकार रूप प्रदान कर दिया।

“ज्ञान संकल्प” पुस्तकालय की बाहरी दीवार एवं प्रवेश द्वार की साज-सज्जा का जिम्मा एक बन्दी ने उठाया और अपना हुनर



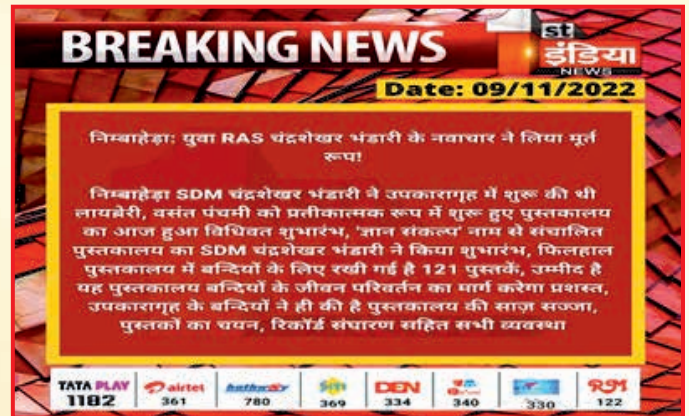


दिखाते हुए सुन्दर गेरूए रंग की कलात्मक खड़िया चित्रकारी कर उसे अलंकृत कर दिया। अब पुस्तकालय से प्रत्येक बंदी का आन्तरिक लगाव हो चुका था उनकी बातचीत में पुस्तकालय प्रमुख चर्चा का विषय बन चुका था। यह देखते हुए हमने पुस्तकालय संचालन की समस्त जिम्मेदारी जैसे रजिस्टर संधारण, पुस्तकें वितरित करना, जमा करना, रख रखाव आदि बन्दियों को

ही सौंप दी। उन्हें शायद मन मांगी मुराद मिल गयी थी।

बन्दियों को खाली समय में पुस्तकें पढ़ने के प्रति रूचि जागृत हो चुकी थी एवं पुस्तकालय का रूप निखारने का जुनून भी। विधिवत शुभारम्भ के समय विभिन्न विषयों की 121 पुस्तकें संकलित हो चुकी थी। इसी दरमियाँ मेरा तबादला यहाँ से कुशलगढ़, बाँसवाड़ा हो गया।

कार्यमुक्त होने से पूर्व मैंने इस पुस्तकालय को समृद्ध बनाने का दायित्व कारापाल के अलावा स्थानीय नागरिकों को सौंप दिया और आह्वान किया कि “विद्यादान महादान” के वाक्य को सार्थक करते हुए निम्बाहेड़ा उपखण्ड के इस कारागृह में स्थापित चित्तौड़ जिले के पहले “ज्ञान संकल्प” पुस्तकालय को पुस्तकें दान एवं भेंट करे ताकि यह पुस्तकालय उत्तरोत्तर प्रगति और समृद्धि प्राप्त कर अपने उद्देश्य को साकार कर सके एवं बन्दियों के जीवन में सकारात्मक बदलाव ला सके और जब वह पुनः समाज में लौटे तो एक सुयोग्य नागरिक बने एवं समाज उन्हें स्वीकार कर सके, क्योंकि हम जानते हैं कि सुबह का भूला अगर शाम को घर लौट आये तो उसे भूला नहीं कहते।



**"IF WE WORK WITH
DETERMINATION, WE CAN
ACHIEVE ANYTHING."**



नजरें निहारो नई आशा



रामावतार कुमावत

उप निदेशक, राजस्व
भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो राजस्थान, जयपुर



प्राची की चंचल किरणों से नया सवेरा नया उषाकाल लेकर सूर्य आता है। नव प्रभात वेला का उष्मीय वातावरण चमत्कारिक ऊर्जा समेटे हुए आता है। इंसान का आदिकाल से ही कालगणना और काल के स्केल को वर्ष महीनों में देखने का प्रक्रम, अपने आप को नए सिरे से नए लक्ष्यों की तरफ लगाव और झुकाव को साकार रूप देने के लिए होता रहा है। विभिन्न मतान्तरों के बावजूद संपूर्ण विश्व में यूनीफार्मिटी, जनवरी को नव वर्ष आगमन स्वीकार्यता रूप में है। चिंतन-अध्ययन-मनन से लेकर सुख-शांति, संपन्नता सभी में एक नए जज़्बे, एक नए जोश और एक नई शुरुआत की आवश्यकता होती है। अति आदर्शवाद से अतिरेक रखते हुए वास्तविक धरातल पर अपनी क्षमता और सामर्थ्य को तौलते हुए, छोटे-छोटे कदमों से आगे बढ़ने की खुशियों के प्लान, इंसान को विभिन्न नव अवसरों की तलाश करवाता है। ये विभिन्न अवसर, नवजागरण और नवाचार हो सकते हैं। मनुष्य की इस शुरुआत को परिवार की खुशियां और आवश्यकताएं, राज्य और राष्ट्र के दायित्वों की ओर ले जाती है। सपने देखना, किसी भी प्लान को साकार करने का आरंभिक हिस्सा होता है। भले ही वो सपने खुद के लिए, परिवार के लिए, समाज और राष्ट्र के लिए और इससे भी बढ़कर वंचित वर्गों, समुदायों व प्रकृति के प्रति हो सकते हैं। मन को सुहाता हुआ काम और तन को सुहाता हुआ कपड़ा, मन और शरीर का संवर्धन और सुरक्षा देता है। किसी भी काम की शुरुआत एक आशा उम्मीद और खुद पर भरोसे का मिलाजुला स्वरूप होता है। धरतीपुत्र, धरती के सीने में बीज का रोपण इसी आशा और उम्मीद से करता है। फल आते आते बहुत सारे झंझावातों से पार निकलकर पहुंचना होता है। नव वर्ष में हम भी एक नई शुरुआत इसी आशा उम्मीद और खुद पर भरोसे के साथ कर सकते हैं। यह शुरुआत, अलग-अलग आयु वर्ग के लोगों पर, महिला और पुरुष पर, स्थान विशेष की परिस्थितियों पर तथा खुद की क्षमताओं के सही आकलन और खुद की आवश्यकताओं के अनुसार किया जा सकता है। बीज का रोपण तो नयी साल के साथ कर ही दीजिए वैसे भी वक्त कहाँ लगता है

वक्त बीतने में। इस बीज रोपण के साथ पोषण की पूर्ति लगातार बनी रहे यह कोशिश रहनी चाहिए।

आशा व उम्मीद भरा वक्त, रेत की तरह फिसल जाता है। परंतु वक्त की फिसलन को रोका तो नहीं जा सकता। हां, यह हो सकता है कि वक्त के गुजरने के साथ-साथ कुछ सकारात्मक परिणाम और हमारी कोशिशें रंग लेकर आए। प्यार, दोस्ती, राजनीति और ना जाने क्या क्या इमोशन की नदियाँ इंसान के अंदर बहती रहती है। इन सब में एक संतुलन साद कर, जितना संभव हो सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ते जाने का नाम ही नए साल का शुरुआती जश्न है। मन के पटल पर अमित छाप छोड़ने के लिए अपनी सकारात्मक ऊर्जा से डस्टबिन अप्रोच को छोड़कर बुके अप्रोच को अपनाना इसका स्थाई समाधान है। डस्टबिन अप्रोच इंसान सामने वाले में हमेशा कमियां ही देखना रहता है। बुके अप्रोच इंसान सामने वाले की अच्छाइयों को ही देखता है केवल। सब कुछ हमारी सोच पर ही निर्भर करता है तो क्यों नहीं हम एक अपरिमेय, धवल सोच से नव वर्ष की नयी किरणों को अपने अंदर आने दे।

आज को आरम्भ का सेतु मानकर, जी लेने की चाहत बरकरार रखिए। उमंगों से भरा यह वर्ष इस Planet के सभी घटकों के लिए विशेषतः मानवता के लिए कल्याणकारी सिद्ध हो इसके लिए अभी से प्रयत्न शुरू करिए।

**‘जाने वाला जाता अपनी अमिट निशानी छोड़ जाता है।
चाहे हो इंसान या हो वक्त एक खजाना छोड़ जाता है॥**

**इंसान की है परख इसी में इस खजाने को धरोहर बना ले।
जज्बे से जीवन जीने का रोशन करते लैंप हाउस बना ले॥’**



यह खुशी का विषय है ...



टीकम बोहरा 'अनजाना'
IAS

मुख्य कार्यकारी अधिकारी,
राजस्थान धरोहर संरक्षण एवं संवर्धन प्राधिकरण, जयपुर



आपाधापी के इस युग में खुशी की बात करना भी मेरे लिए खुशी का विषय है।

आखिर खुशी है क्या?

जब मन प्रसन्न हो जाए, उर, आनन्द से सराबोर हो जाए तो इसे खुशी कहते हैं। वस्तुतः खुशी मनुष्य की एक मानसिक अवस्था है जिसमें मनुष्य अच्छा महसूस करता है। तो इसे यों भी कहा जा सकता है कि खुशी मन की अनुभूति का विषय है जिसमें हमारे मन को अच्छा अनुभव होता है।

क्या खुशी, सुख से अलग है?

सुख मौटे तौर पर दो तरह के होते हैं-शारीरिक सुख और मानसिक सुख। जब हमारे शरीर को आराम मिलता है, हमारी इंद्रियों की तृप्ति होती है तो हमें दैहिक सुख का अहसास होता है। जैसे भूख लगने पर हमने स्वादिष्ट भोजन किया, थकान होने पर शरीर की मालिश करायी, प्यास लगने पर पानी पीया तब हमारे शरीर को तृप्ति होती है, ये शारीरिक सुख हैं।

मानसिक सुख में शरीर प्रत्यक्ष रूप से कुछ ग्रहण नहीं करता मगर देखने, सुनने या सोचने मात्र से ही मन को अच्छा लगने लगता है। जैसे पसन्दीदा संगीत सुनने, प्रकृति का मनोरम दृश्य देखने, किसी को उपहार देने और अपने प्रिय से मिलने की प्रतीक्षा करने में हमें जो आनन्ददायक अनुभूति होती है वह मानसिक सुख है।

तो कहा जा सकता है कि खुशी हमारे मानसिक सुख की अवस्था है।

खुशी का आधार क्या है ?

अक्सर लोग अच्छे घर-गाड़ी, धन-सम्पदा को खुशी का आधार समझते हैं। ये ही लोग अपनी खुशी पब और पाँच सितारा होटलों, विदेशी कपड़ों, परफ्यूम, आलीशान बंगलों, विला, फार्म हाउस, इम्पोर्टेड कार, बैंक बैलेन्स, शेयर व म्यूचुअल फंड्स में ढूँढते हैं। मेरा आशय इनकी बुराई करना नहीं है अपितु खुशी के आधार को स्पष्ट करना है। धन-सम्पदा हमारे जीवन को आर्थिक

सुरक्षा देती है मगर सम्भव है कि पर्याप्त धन-सम्पदा होने के बावजूद भी कोई व्यक्ति दुःखी हो सकता है। जैसे अकूत सम्पत्ति के मालिक किसी व्यक्ति का दाम्पत्य जीवन टूट जाए, अपने बच्चे छोड़ जाएँ, शरीर व्याधिग्रस्त हो जाए तो मन को कैसे खुशी होगी? जबकि साधारण आर्थिक स्थिति वाला व्यक्ति किसी सम्पन्न व्यक्ति से ज्यादा खुशी हो सकता है। अच्छी बारिश होने पर किसान खुशी हो जाता है, त्योहार पर नये कपड़े पाकर मजदूर भी खुशी हो लेता है, महँगाई भत्ता बढ़ने पर सरकारी कर्मचारी खुशी हो जाता है, बेटे माँ-पिता का खयाल रखे तो वे खुशी रहते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो अच्छी आर्थिक स्थिति खुशी की कोई गारण्टी नहीं है। यही कारण है कि आर्थिक एवं भौतिक सुख-सुविधाओं के बावजूद कई विकसित देशों में आत्महत्या की दर बहुत ऊँची है।

तो फिर खुशी का ठिकाना कहाँ है?

खुशी का असली ठिकाना है हमारा मन। मन में खुशी आती है हमारे विचार से, हमारे नजरिये से। जो नापसन्द हो उसे हम या तो बदल दें या फिर उसे खुले दिल से स्वीकार कर लें तो हम खुशी महसूस कर सकते हैं। जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण और आशावादी नजरिया हमारे मन की खुशी को बढ़ाता है। स्वस्थ शरीर होना, अपने परिवारजनों का प्रेमपूर्वक साथ में रहना जीवन यापन के लिए हुनर या रोजगार का होना किसी भी साधारण व्यक्ति के मन को खुशी रखने के लिए पर्याप्त हो सकते हैं। जबकि बच्चों के भविष्य की चिन्ता, संकट आने की आशंका और कुछ खोने का भय हमें खुश नहीं रहने देते।

खुशी का पैमाना क्या है?

खुशियों के मायने या पैमाने, सब के लिए अलग होते हैं। जैसा कि हम जानते हैं कि खुशी हमारे मन को महसूस होती है तो इसे मापने के लिए कोई गणित नहीं हो सकती। फिर भी खुशी का आकलन करने के लिए संयुक्त राष्ट्र ने सकल राष्ट्रीय उत्पाद यानि जी.डी.पी., प्रति व्यक्ति आय, आजादी, औसत आयु, स्वस्थ

जीवन, भ्रष्टाचार, सामाजिक सहारा और सामाजिक उदारता को खुशियों को परखने का आधार बनाया है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खुशी को मापने के लिए जिन घटकों का इस्तेमाल प्रयोग किया गया वे 14 घटक हैं—(1) व्यवसाय और अर्थव्यवस्था (2) नागरिक-रोजगार (3) संचार एवं तकनीक (4) सामाजिक मुद्दों पर विविधता (5) शिक्षा और परिवार (6) भावनात्मक अनुभूति (7) पर्यावरण और ऊर्जा (8) भोजन और आवास (9) सरकार और उसकी नीतियां (10) कानून व्यवस्था (11) स्वास्थ्य (12) धर्म और नैतिक मापदंड (13) यातायात (14) कामकाज।

तो खुशी के मामले में हम कहाँ पर हैं?

मार्च, 2022 में जारी 146 देशों की विश्व प्रसन्नता सूचकांक सूची में फिनलैंड (7.821), डेनमार्क (7.636), और आइसलैंड (7.557), क्रमशः प्रथम द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर हैं जबकि युनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका (6.977) 16वें, यूनाइटेड किंगडम (6.943) 17वें, “फ्रान्स (6.687) 20वें, जापान (6.039) 54वें, चीन (5.585) 72वें, रूस (5.459) 80वें, स्थान पर हैं। हमारे पड़ोसी देश नेपाल (5.377) 84वें, बांग्लादेश (5.155) 94वें, पाकिस्तान (4.516) 121वें, और श्रीलंका (4.362) 127वें स्थान पर हैं।

विश्व प्रसन्नता सूचकांक की सूची में हम भारतीय 3.777 स्कोर के साथ 136वें स्थान पर अटके हैं। इससे पहले वर्ष 2012 में खुशमिजाजी दिखाने वाली इस तालिका में हम 111वें स्थान पर थे और एक दशक बाद 25 स्थान लुढ़ककर हम अब 136वें स्थान पर आ पहुँचे हैं। निश्चित रूप से यह स्थिति हमारी कम होती हुई खुशी को दर्शाती है।

क्या खुशी स्थायी होती है ?

एक खुशी मिलने पर वह हमारी नयी महत्वाकांक्षा को जन्म देती है। जब हमारी महत्वाकांक्षा अधूरी रह जाती है या पूरी नहीं हो पाती है तो हमारी खुशी की अनुभूति में भी कमी आती है। इसे यों भी कहा जा सकता है कि एक खुशी दूसरी खुशी की बुनियाद का काम करती है। विद्यार्थी को परीक्षा में बेहतर परिणाम मिलता है तो वह खुश होता है। फिर वह उम्मीद करता है कि आगे के अध्ययन हेतु उसे अमुक संस्थान में प्रवेश मिल जाए। उसकी उम्मीद पूरी हो जाए तो खुशी दुगुनी हो जाती वरना आधी रह जाती है। इच्छित परीक्षा-फल की खुशी नये जॉब की खुशी का आधार बनती है। परिवार में किसी का विवाह होने और बच्चे का जन्म होने पर परिवारजनों को खुशी होती है मगर अपेक्षाएँ पूरी नहीं होने पर

खुशी काफूर हो जाती है। तो कहा जा सकता है कि कभी कोई खुशी स्थायी नहीं रहती। स्थायी खुशी के लिए मन को एक साधक की भाँति साधना-बाँधना पड़ता है। आत्म-मुग्ध व्यक्ति ही हमेशा खुश रह सकता है।

खुश कैसे रहा जाए ?

खुशी वस्तुतः हमारे नजरिये पर निर्भर करती है। समय और परिस्थितियों के अनुसार हमारा नजरिया बदलता रहता है तो हमारी खुशी भी बदलती रहती है।

किसी समय विशेष पर हमें जो खुशी होती है वही कालान्तर में दुःख या कष्ट का सबब भी बन सकती है। प्रेम-विवाह का असफल होना इसका उपयुक्त उदाहरण हो सकता है। विवाह-विच्छेद या तलाक शब्द खुशी के ख़त्म/कम होने का सूचक है मगर जीवन-साथी से परेशान व्यक्ति के लिए यह खुशी मौका हो सकता है।

जो लोग ब्रांडेड जूते नहीं होने से परेशान हैं उन्हें खुश होना चाहिए कि लाखों लोगों को सिर्फ चप्पल ही नसीब होती होती हैं और वे चप्पल पहनकर भी खुश हैं। जो लोग अपनी चप्पल देखकर दुःखी हैं उन्हें यह सोचकर खुश होना चाहिए कि कई लोगों के पास चप्पल पहनने के लिए पाँव ही नहीं हैं। हम अपना नजरिया बदल कर हमारे मन की खुशी बढ़ा सकते हैं।

खुश रहने का मतलब निष्क्रिय होना कदापि नहीं है बल्कि सहज मन से लक्ष्य की ओर प्रयासरत रहना है, अग्रसर होना है। धैर्य और सन्तोष का संतुलित सम्मिश्रण करके सहजतापूर्वक साध्य/लक्ष्य/इच्छित के लिए यत्न करते रहने से मन को दीर्घकाल तक खुश रखा जा सकता है।

नकारात्मक नजरिये वाला व्यक्ति हमेशा दुःख या कष्ट ढूँढता और चुनता रहता है। ऐसा व्यक्ति यह सोचता है कि गुलाब के साथ कांटे बहुत हैं जबकि सकारात्मक सोच रखने वाला शख्स सभी परिस्थितियों में कुछ न कुछ अच्छा देखता है और अच्छाई को चुनता है। सकारात्मक सोच वाले व्यक्ति की नजर कांटों के बजाय गुलाब के सुंदर फूल पर पड़ती है और वह सुन्दर गुलाब को देखकर उसका मन प्रसन्न हो जाता है।

छायीं खुशियाँ जीवन में और खुशबू उपवन में, काँटों का दर्द सहा मगर, पाया है मैंने गुलाब। अपना जो नजरिया है, गमो खुशी का जरिया है, गम भी आये कई मगर, खुशी का रखा हिसाब। जिसके जीने का ऐसा अंदाज है, खुशियाँ उसी की हमराज हैं।

तो आइए, अपने नजरिये में बदलाव लाइए और खुशियाँ ही खुशियाँ पाइए।

खुशी अपनी जगह से हिली नहीं
ढूँढा मगर वो मिली नहीं,
मुझको देख कर खुशी
मन ही मन मुस्कायी।

तुम मुझे पा न सकोगे किसी जरिये से,
तुम पाओगे मुझे केवल अपने नजरिये से।
मुझे क्यों ढूँढते हो कहीं ओर,
वजह पर क्यों करते हो गौर।

मेरे आने का तुम, ना इन्तजार करो,
उम्मीद की रोशनी में, हर लम्हे को प्यार करो।
मन का चाहा, हमेशा होता नहीं है,
खुश रहने वाला इन्सान, कभी रोता नहीं है।

मैं तितली की मानिंद हूँ, मुझे पकड़ ना पाओगे,
पकड़ोगे अगर तो, दूर आनन्द से हो जाओगे।
अनायास ही तुम मुझको, पास अपने पाओगे,
क़ैद अगर तुमने किया, जिन्दा न मुझको पाओगे।

पूछा तो खुशी बोली, बनाकर सूरत भोली,
मेरी कोई दुकान नहीं
वो शख्स न मुझको पायेगा
जिसके चेहरे पर मुस्कान नहीं।

बाहर नहीं मैं तुम्हारे अन्दर हूँ,
मैं कोई क़तरा नहीं पूरा समन्दर हूँ।
कहीं ओर नहीं अपने भीतर तलाश करो,
नजरिया बदलने का पहले तुम प्रयास करो।

कोई समेट ना सकेगा, मुझे अपनी जेब में,
मैं मिलूँगी नहीं, किसी भी फरेब में।
तितली को प्यारा, जैसे खिला सुमन है,
मुझको भी प्यारा, वैसे ही सुमन है।





‘द्वार की देहरी’



चन्द्रशेखर भण्डारी
उपखण्ड अधिकारी, कुशलगढ़
जिला बांसवाड़ा



क्या तुम्हें किंचित नहीं भय, भुवन के इस भाल का ?
क्या तुम्हे अब भी है संशय, संक्रमण के काल का ?
महाशक्ति पस्त है, जो दम्भ भरती थी कभी।
धरा निर्जन हो रही, जो मुस्कुराती थी कभी॥
मंदिर-ओ-मस्जिद की चौखट, आज है सूनी पडी।
अनदिखे अदृश्य संकट, की घड़ी है आ पडी॥
अब कहाँ है जाति-पाति, धर्म की अंधी लडाई ?
प्राण है संकट में जब, युगधर्म की देते दुहाई॥
आपदा की हर घडी में, कहो कब विचलित हुए हम ?
विश्व जब सोता निशा में, प्रहरी बन जागे रहे हम ॥
सांस टूटी देह छूटी, विश्व जब मरघट हुआ।
मृत्यु का यह मौन-ताण्डवय, हाय! जब घर-घर हुआ॥
आस की डोरी को थामे, दीप सम जलते रहे हम।
सारथी बन विश्व रथ के, पथ प्रदर्शित करें रहे हम॥
द्वार की देहरी को देखो, आज ना लाँघे कोई।
दूरियाँ मानक है जो, ना फलांगे अब कोई॥
यह समर ऐसा समर है, तुम ही हो जिसके सिपाही।
लाँघ दी सीमा जो तुमने, मचेगी भीषण तबाही॥
वज्र बन जो लड रहे, उन बाजुओ में बल भरे हम।
जो हिमालय से अडिग है, उन हौसलों में दम-भरे हम॥
क्या नहीं उनको सताती, मौत की आहट कभी ?
आती नहीं होगी उन्हें क्या, याद अपनों की कभी ?
किन्तु निज कर्तव्य पथ पर, मोह को त्यागा जिन्होंने।
थाम कर आरोग्य ध्वज को, शत्रु को साधा जिन्होंने॥
राष्ट्रहित की इस हवि में, स्वत्व को चंदन करे हम।
उन तपस्वी कर्मवीरों का, उठो वन्दन करे हम॥



अनुभव और जोश - एक संवाद



राजस्थान प्रशासनिक सेवा में नवनियुक्त बैच 2021 का परिषद् में स्वागत एवं वरिष्ठ साथियों से संवाद





अनुभव और जोश - एक संवाद



राजस्थान प्रशासनिक सेवा में नवनियुक्त बैच 2021 का परिषद् में स्वागत एवं वरिष्ठ साथियों से संवाद





गाँधी की आँधी और राजपूताना



डॉ. धर्मेन्द्र भटनागर
IAS (R)



लोकप्रिय राष्ट्रीय जननायक महात्मा गांधी का देश के जनमानस पर बहुत प्रभाव था। यद्यपि गांधीजी ने राजपूताना में राष्ट्रीय आंदोलन के गांधीयुग (1917 से 1947 ई.) के दौरान किसी भी आंदोलन या कार्यक्रम का व्यक्तिगत नेतृत्व नहीं किया, तथापि उनका प्रभाव राजपूताना की प्रजा के दिलोदिमाग पर अत्यधिक था।

गांधीजी के सिद्धांतों, कार्यक्रमों, विचारों व शिक्षाओं को राजपूताना के गांधीवादियों ने जन-जन तक पहुंचाया। गांधीजी के पांचवें पुत्र जयपुर रियासत की सीकर जागीर के निवासी सेठ जमनालाल बजाज थे, जो राजपूताना में गांधीजी के प्रमुखतम प्रतिनिधि थे। बजाज जी के अतिरिक्त पिलानी के घनश्यामदास बिडला भी प्रमुख गांधीवादी थे, जिन्होंने राजपूताना के निवासी व प्रवासी मारवाड़ियों से धन एकत्र कर गांधीजी के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय आंदोलन को पुष्ट बनाया।

अजमेर मेरवाड़ा, ब्रिटिश भारत के अंतर्गत अंग्रेजों द्वारा सीधे रूप से शासित प्रान्त था। गांधी के नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का कार्यक्षेत्र ब्रिटिश भारत था। कांग्रेस की मान्यता प्राप्त इकाइयां अजमेर मेरवाड़ा प्रान्त के कस्बों में स्थापित थी। अजमेर व ब्यावर राजपूताना में राजनैतिक जागृति के प्रमुख केंद्र थे जहां कांग्रेस जन व गांधीवादी देश भक्त गांधीवाद को आम जन तक पहुंचाते थे।

गांधीजी राजपूताना में तीन बार अजमेर की यात्राओं पर आये थे। उनकी धर्मपत्नी कस्तूरबा भी दो बार अजमेर आयी थी। इस कारण अजमेर मेरवाड़ा क्षेत्र के कई राष्ट्रवादी, देशभक्त व कांग्रेसजन गांधी जी के व्यक्तिगत संपर्क, नेतृत्व व मार्गदर्शन के कारण समर्पित गांधीवादी बन गये।

गांधीजी के साबरमती आश्रम अहमदाबाद तथा बाद में सेवाग्राम आश्रम वर्धा में कई गांधीवादी जननेता यथा हरिभाऊ उपाध्याय, रामनारायण चौधरी, शोभालाल गुप्ता आदि कुछ समय रहे थे। यहां उन्होंने गांधीजी के निकट सम्पर्क में गांधीवादी सिद्धांतों विचारों, कार्यक्रमों और धारणाओं का प्रशिक्षण प्राप्त

किया। इन्होंने गांधीवाद को राजपूताना के विभिन्न क्षेत्रों में जन-जन तक पहुंचाया।

अजमेर के हरिभाऊ उपाध्याय, रामनारायण चौधरी, मेवाड़ के विजयसिंह पथिक, मणिक्यलाल वर्मा, जयपुर के जमनालाल बजाज व हीरालाल शास्त्री, मारवाड़ के जय नारायण व्यास प्रमुख गांधीवादी थे। इनके अतिरिक्त बीकानेर के वकील रघुवर दयाल, कोटा के पं. नयनूराम शर्मा और अभिन्न हरी, अलवर के मास्टर भोलानाथ, वागड़ के भोगीलाल पण्डा, सिरोही के गोकुल भाई भट्ट आदि अन्य प्रसिद्ध गांधीवादी जननेता थे।

गांधीजी की सहमति से हरिपुरा के 1938 के कांग्रेस अधिवेशन में राजपूताना की देशी रियासतों के शासन संबंधी कार्यकलापों में सीधे हस्तक्षेप का निर्णय लिया गया। तदुपरान्त देश की स्वतंत्रता तक राजपूताना की लगभग सभी 19 देशी रियासतों में प्रजामण्डलों की स्थापना हुई। उन्होंने गांधीजी के नेतृत्व में रियासती प्रजा को संगठित करके राष्ट्रीय आंदोलन को आगे बढ़ाया।

गांधीजी राष्ट्रीय आंदोलन में दो पहलुओं पर बल देते थे-पहला, राजनैतिक आंदोलन और दूसरा, रचनात्मक कार्यक्रम। रचनात्मक कार्यक्रम में खादी कार्यक्रम, कौमी एकता, हरिजन कल्याण, बुनियादी तालीम, नशामुक्ति आदि आते थे। लगभग सभी गांधीवादियों ने गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने का काम किया। विशेष रूप से गांधीवादी जननेताओं की धर्मपत्नियों ने रचनात्मक कार्य में बहुत योगदान दिया। इनमें श्रीमती जानकीदेवी बजाज, श्रीमती रतन शास्त्री, श्रीमती भागीरथी उपाध्याय, श्रीमती अंजना चौधरी, श्रीमती नारायणीदेवी वर्मा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

स्वराज्य की सेना के सिपाही :-

महात्मा गांधी ने सम्पूर्ण देश में स्वराज्य के लिये पुनीत यज्ञ शुरू किया और सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह के सिद्धांत दिये। गांधीजी के अनुसार स्वराज्य की सेना के सिपाही को अधोलिखित काम करने होंगे-

1. उसे अहिंसा के हथियारों सत्याग्रह, असहयोग, बलिदान के लिये सदैव तैयार व तत्पर रहना होगा।
2. विदेशी कपड़ा त्यागो और शुद्ध खादी पहनो। स्वराज्य खादी से ही मिलेगा। देश की आजादी के लिये रोज चरखा चला कर सूत कातो।
3. गुलामी को बढ़ाने वाली तालीम छोड़ कर ऐसी तालीम लो जिससे दिल में देशभक्ति पैदा हो।
4. अपनी मातृभाषा और राष्ट्रभाषा को भली-भांति सीखो। अंग्रेजी को महत्व मत दो।
5. नारी शक्ति को समानता का दर्जा दिया जाये।
6. हिन्दू-मुस्लिम कौमी एकता के द्वारा ही स्वराज्य प्राप्त होगा।
7. हिन्दुस्तान गांवों का देश है। गांवों से प्रेम करना सीखो गांवों में बनी चीजों का उपयोग स्वाभिमान से करो। गांव की सफाई पर ध्यान दो।
8. हरिजनों को सम्मान दिया जाये।
9. नशा मुक्त जीवन जिया जाये।
10. ट्रस्टीशिप के सिद्धांत में आस्था रखते हुये आर्थिक समानता के लिये कार्य किया जाये।
11. श्रम एवं स्वयंसेवा को महत्व दिया जाये।

गांधीजी के व्यक्तित्व की विशेषताएं सभी गांधीवादियों के लिए अनुकरणीय थी। जन साधारण भी गांधीजी की जीवन शैली को यथा सम्भव अपनाने का प्रयास करता था। गांधीजी के विलक्षण व्यक्तित्व की विशेषताएं, प्रमुख मान्यताएं एवं कार्य प्रणाली अधोलिखित थीं:-

1. राम-नाम रामबाण :

गांधीजी ने अपनी 'आत्मकथा' में लिखा है कि 'राम-नाम के प्रति उनके हृदय में श्रद्धा का बीज बोने वाली उनकी धाय रम्भा थी।

राम, अल्लाह, गॉड, अहुरमज्द सब एकार्थक शब्द हैं। क्या मुसलमानों का भगवान हिन्दुओं, पारसियों या ईसाइयों के भगवान से जुदा है? नहीं, सर्वशक्तिमान ईश्वर तो एक ही है। उसके कई नाम हैं और उसका जो नाम हमें सबसे ज्यादा प्यारा होता है उस नाम से हम उसको याद करते हैं।

गांधीजी का पूर्ण विश्वास था कि राम-नाम का उच्चारण सब प्रकार के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक कष्टों की रामबाण औषधि है।

राम-नाम सब बीमारियों की रामबाण दवा है। सच्चा कुदरती

इलाज तो राम-नाम ही है। राम-नाम ही रामबाण इलाज है।

यह उपवास के समय का श्रेष्ठ सहायक है। गांधीजी शरीर मन और आत्मा की शुद्धि के लिये दीर्घ उपवास रखते थे, तब राम-नाम उनका प्रमुख सहारा होता था।

जब सब कुछ अच्छा होता है तब तो सब कोई राम का नाम लेता ही है लेकिन सच्चा भक्त तो वह है जो सब कुछ बिगड़ जाने पर भी राम को याद करता है।

वस्तुतः राम-नाम गांधीजी के हृदय में रच-बस गया था तभी गांधीजी के मुंह से अन्तिम वक्त भी दो बार मुंह से यही शब्द निकले थे-

‘रा.....म! रा.....म!!

2. सादा जीवन उच्च विचार :

गांधीजी का जीवन पूर्णतः सादगी युक्त था। वस्त्रों के नाम पर वे केवल लंगोटी पहनते थे। उन उनके पैरों में खड़ाऊ रहती थी। वे एक लाठी लेकर चलते थे। जीवन में केवल अत्यावश्यक वस्तुओं का ही उपयोग करते थे, वह भी सीमित मात्रा व संख्या में। चश्मा व जेब घड़ी ऐसी ही आवश्यक वस्तुएँ थीं। गांधी विचार बहुत उच्च व आदर्शमय थे। वे विचारों की शुद्धता पर बहुत बल देते थे।

3. नैतिकता एवं ईमानदारी :

गांधीजी एक महात्मा, संत तथा योगी थे, जिनकी नैतिक मूल्यों में पूर्ण आस्था थी। उनका कथन था कि साध्य तो पवित्र होना ही चाहिए, उसकी प्राप्ति के साधन भी समान रूप से पवित्र होने चाहिए। वे जीवन के प्रत्येक पहलू में नैतिकता को उच्च स्थान देते थे और ईमानदारी को सर्वश्रेष्ठ नीति मानते थे। वे सत्य और अहिंसा के पुजारी थे। उनकी कथनी और करनी में कोई अन्तर नहीं था।

गांधीजी स्वयं मर्यादा पुरुषोत्तम राम के परम भक्त थे और चरित्र की श्रेष्ठता उनके लिये सर्वोपरि थी।

4. विलक्षण व्यक्तित्व :

बापू मानवोचित गुणों की खान थे। वे निर्भीक, दयालु, स्पष्टवादी, कुशाग्र बुद्धि वाले, स्पष्टवादी व्यक्तित्व के धनी थे। वे बहुत विनोदी स्वभाव के एवं हाजिर जवाब थे। विभिन्न तरह के लोगों को निरुत्तर कर देने की बापू में अद्भुत क्षमता थी। संवाद में बापू माहिर थे।

गांधीजी बहुत सहिष्णु थे, विशेष रूप से अपने विरोधियों और आलोचकों के प्रति। वह कभी क्रोधित नहीं होते थे। उनके विचार बहुत सकारात्मक एवं उदार थे। गांधीजी बहुत विनम्र स्वभाव के

थे और सभी को सम्मान देते थे। उनके व्यवहार का गांधीवादियों पर बहुत प्रभाव था।

5. चमत्कारी लेखनी :

बापू चमत्कारी लेखनी के धनी थे। उन्होंने विश्व के लोकनेताओं में सर्वाधिक साहित्य सृजन किया है। उन्होंने जीवन के प्रत्येक पहलू को अपनी प्रभावी लेखनी से छुआ है। उनकी पुस्तकें, उनके लेख, उनके समाचार पत्र, उनकी टिप्पणियां, उनके पत्र अत्यंत प्रभावशाली थे। गांधीजी द्वारा प्रकाशित है नवजीवन, यंग इण्डिया, हरिजन सेवक तथा हरिजन समाचार पत्र जन जन तक पहुंचते थे। यही कारण था कि जो व्यक्ति उनसे जुड़ गया वह उनका होकर रह गया।

6. खादी वस्त्र :

गांधीजी कहना था कि खादी केवल वस्त्र नहीं एक जीवनशैली है। खादी स्वराज्य प्राप्ति का साधन है। यह आर्थिक आत्मनिर्भरता, सांस्कृतिक गौरव और जन-सामान्य से जुड़ाव का प्रतीक है। गांधीजी के अनुसार खादी का वस्त्र स्वास्थ्य के लिये लाभकारी रोजगार देने वाला था। वे स्वयं नियमित रूप से चरखा चलाते थे। गांधीजी के समय में चरखा एक राष्ट्रीय चिन्ह बन गया था। गांधीजी ने लोगों से विदेशी वस्त्र त्याग कर स्वदेशी खादी को अपनाने का आग्रह किया।

7. गांधी टोपी :

खादी की सफेद गांधी टोपी भी स्वतंत्रता संग्राम के दौरान बहुत लोकप्रिय हो गयी और देशभक्ति का प्रतीक मानी जाने लगी। गांधी टोपी राजनेताओं, राजनैतिक कार्यकर्ताओं व भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्यों में बहुत प्रचलित हो गयी।

8. मानवतावादी :

गांधीजी सत्य अहिंसा एवं मानवतावाद के समर्थक थे। उनकी दृष्टि में सभी मनुष्य समान थे। वे दरिद्र व्यक्ति को ईश्वर के समान मानते हुये उसे दरिद्र नारायण कहते थे। हेय दृष्टि से देखे जाने वाले शुद्रों व सफाई कार्यकर्ताओं को गांधीजी ने हरिजन का नाम दिया था। अर्थात जो हरि को जो सबसे अधिक प्रिय हो। गांधीजी बीमार व्यक्तियों की सेवा-सुश्रुषा स्वयं करते थे तथा औरों को भी करने के लिये कहते थे।

9. आरोग्य की कुंजी-कुदरती उपचार :

गांधीजी अच्छे स्वास्थ्य को बहुत महत्व देते थे। गांधीजी का

कहना था कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है। गांधीजी का विश्वास था कि स्वास्थ्य के सादे नियमों का पालन करके मानव अपने शरीर, मन और आत्मा को पूर्ण स्वस्थ रख सकते हैं। इसके लिये उन्होंने मिट्टी, पानी, हवा, धूप, आकाश नामक पंच महाभूतों तथा उपवास आदि की मदद से किये जाने वाले सादे कुदरती उपचार हमें बताये हैं। गांधी जी के शब्दों में स्वास्थ्य के सरल नियमों पर अमल करने वालों को आरोग्य की कुंजी मिल जायेगी और उन्हें डॉक्टरों एवं वैद्यों का दरवाजा नहीं खटखटाना पड़ेगा। इन उपचारों के साथ उन्होंने रामनाम के जप अथवा ईश्वर-श्रद्धा को भी एक अनिवार्य अंग के रूप में जोड़ दिया है।

गांधीजी का कहना था कि प्रकृति के कानून को तोड़ने वाले व्यक्ति को जेल में डालना चाहिए। जबकि समाज के कानून को तोड़ने वाले को उसके मानसिक इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती करना चाहिए।

10. उपवास :

गांधीजी शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक शुद्धि हेतु उपवास रखने में विश्वास करते थे। इससे आत्मबल एवं आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। ऐसी उनकी सीख थी। कई बार वे विरोध जताने एवं पश्चाताप के लिये भी उपवास का उपयोग करते थे। उनके प्रभाव से उपवास का जनजीवन में महत्व बढ़ा।

11. मौन-व्रत

गांधीजी प्रत्येक सोमवार को मौन रखते थे। अत्यावश्यक होने पर भी वे बोलने की जगह कागज पर बात लिख देते थे। सप्ताह में एक दिन के मौन व्रत से गांधीजी को बड़ी शान्ति व शक्ति मिलती थी। सप्ताह भर का इकट्ठा हुआ काम गांधीजी मौन व्रत के दौरान निपटा लेते थे।

12. जीव मात्र के प्रति दया :

गांधीजी सभी जीवधारियों के प्रति भी बहुत दया-भाव रखते थे। वे जीव मात्र के सह अस्तित्व में विश्वास करते थे और शाकाहार के समर्थक थे। गांधीजी विशेष रूप से गाय को माता मानते थे और उसकी सेवा पर विशेष बल देते थे। उनकी प्रेरणा से गौ-सेवा के कार्य को बहुत पवित्र और महत्वपूर्ण माना जाने लगा।

13. श्रेष्ठ समय प्रबन्धन :

गांधीजी समय के महत्व पर बहुत बल देते थे। गांधीजी वक्त की पाबन्दी का बहुत ध्यान रखते थे।

गांधीजी द्वारा मिलने के इच्छुक व्यक्तियों को अजमेर और ब्यावर रेलवे स्टेशन के बीच रेलगाड़ी में मिलने का समय देना समय प्रबन्धन का एक महत्वपूर्ण एवं रोचक उदाहरण है।

14. डायरी लेखन :

गांधीजी नियमित रूप से डायरी लिखते थे। आप उसे आत्मनिरीक्षण का एक महत्वपूर्ण साधन मानते थे।

इससे महत्वपूर्ण घटनायें भी लिपिबद्ध हो जाती थीं और अपनी गलतियों से सीखने का अवसर भी मिलता था। गांधीवादी भी डायरी लेखन किया करते थे।

15. गांधीजी के तीन बंदर :

महात्मा गांधी जीवन शुद्धि के लिये तीन महत्वपूर्ण सिद्धांतों को जीवन में उतारने पर जोर देते थे। बापू के पास तीन बंदरों की एक प्रतिकृति थी। एक बन्दर ने अपने हाथों से अपनी आंखें बंद कर रखी हैं। दूसरे ने अपने कान बंद कर रखे हैं और तीसरे ने अपना मुंह बंद कर रखा है। बापू की यह सीख थी कि आंखों का बंद करना पहली आकृति से अभिप्रेत है, दूसरों में कोई दोष नहीं देखना चाहिए। कान बंद करना दूसरी आकृति का अर्थ है दूसरों की बुराई नहीं सुननी चाहिए और मुंह बंद करना तीसरी आकृति का अर्थ है दूसरों की कोई बुराई नहीं करनी चाहिए। बापू का मानना था कि उक्त तीन गुणों को जीवन में आत्मसात करना अति आवश्यक एवं उपयोगी है।

16. मितव्ययता :

बापू एक पिन भी बेकार नहीं जाने देते थे। एक बार एक आलोचक ने उन्हें कागजों में अपशब्द लिखकर पिन लगा कर दिये। गांधीजी ने कागजों पर ध्यान नहीं दिया किन्तु पिन को अवश्य निकाल कर काम में लिया। कई बार आलपिन की बजाय बबूल के कांटे से पिन का काम लेते थे। कागज के टुकड़ों को एकत्र कर उनके पीछे लिखा जाता था। उपयोग में आये लिफाफे उलट कर दुबारा उपयोग में लिये जाते थे।

17. प्रार्थना :

गांधीजी की सच्चे दिल से प्रार्थना करने में बहुत आस्था थी। उनके आश्रम में प्रातः और सायं प्रार्थना होती थी। गांधीजी प्रार्थना को मस्तिष्क, हृदय एवं आत्मा की शुद्धि का उत्तम साधन मानते थे। प्रार्थना से व्यक्ति में आत्मविश्वास का संचार होता है। यह भी उनकी सीख थी। प्रार्थना के दौरान गांधी जी का प्रिय भजन 'वैष्णव जन तो तेने कहिए.....' एक विख्यात जनप्रिय भजन है।

गांधीजी के 30 जनवरी, 1948 को ब्रह्मलीन होने के बाद उनकी अस्थियां राजपूताना में अजमेर के निकट तीर्थ गुरु पुष्करराज में प्रवाहित की गई। इस अवसर पर वहां अपार जन-समूह उमड़ा था।



राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, अजमेर



संस्मरण - गिवाई



डॉ. सूरज सिंह नेगी

अति. जिला कलक्टर
सवाई माधोपुर



एक किसान के लिए खेती के बाद सर्वाधिक प्रिय होता है उसका पशुधन व उसमें भी गोवंश का कहना ही क्या। बाज्यू (पिताजी) और अम्मा (दादीजी) की मौत के बाद बूबू (दादाजी) की अस्वस्थता के चलते उनसे खेती का काम नहीं किया जाता था। हल चलाना सम्भव न था। बैल बेच दिए गए थे। कुछ समय तक छाने (गौशाला) में पशुधन न होने से कुछ अच्छा महसूस न होता था। तब ईजा (माँ) ने एक गाय खरीद ली थी, उद्देश्य यही था कि दूध पीने से स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा और दूध बेचने से घर में रुपए की आमद भी होगी। इसके अलावा छाना (गौशाला) भी आबाद रहेगा।

पहले दिन से ही गाय से बड़ा लगाव हो गया था। मेरा कुछ समय गाय की टहल में बीतने लगा था। उसके लिए चारा लाना, सूखे चारे में हरा चारा मिला कर देना, ईजा के साथ उसे नहलाना आदि कई ऐसे काम थे जो उस समय अच्छे लगते थे। कई बार मैं उसकी गर्दन में दोनों हाथ फंसाकर खड़ा हो जाता। वह गाय भी इतनी सीधी थी कि चुपचाप खड़ी रहती, कुछ न कहती बस अपना सिर आगे कर देती।

उसका नामकरण मैंने गिवाई कर दिया था। मैं नहीं जानता था कि गिवाई का क्या आशय है। सच तो यह है कि आज तक गिवाई का मतलब समझ में नहीं आया। लेकिन कुछ भी हो गिवाई सम्बोधन में इतना आकर्षण था कि जैसे ही उसके कानों में वो शब्द गूँजता उसके कान खड़े हो जाते और पूँछ उठाकर नाचते-कूदते मेरी तरफ चली आती। यह सब देख मैं रोमांच से भर उठता।

गिवाई यद्यपि पशु थी लेकिन हमारे परिवार के सदस्यों में शुमार हो गई थी। जब भी मैं जंगल में लकड़ी लेने या अन्य किसी काम से जाता तो वहाँ घास चर रही गिवाई को मेरे आस-पास होने का आभास हो जाया करता और वो मेरे पीछे-पीछे दूर तक चली आती फिर मुझे ही उसकी पीठ पर थपकी देकर उसे घास चरने की हिदायत देनी पड़ती और वो पुनः घास चरने लग जाती। उस

समय मैं इतना न समझ पाया था तब तो गिवाई की गतिविधियाँ और आज्ञापालन देख मन रोमांच से भर उठता था लेकिन आज सोचता हूँ कि पशु भी मानव जीवन के कितने नजदीक हैं। मनुष्य की बोली, भाषा, संकेत सब कुछ समझ जाते हैं और उसी अनुरूप अपना व्यवहार करने लग जाते हैं। गिवाई सच में हम दोनों माँ बेटों के बहुत नजदीक हो गई थी।

बाज्यू (पिताजी), अम्मा (दादी) और बूबू (दादाजी) की अल्प समय के अंतराल में ही मौत ने ईजा को तोड़ दिया था। घर में हम दोनों के अलावा कोई न था। भाई साहब तो वर्ष 1975 में ही जयपुर आ गए थे।

ऐसे में गिवाई भी हमारे परिवार का ही सदस्य बन गई थी। उससे सुख दुःख की बातें होती, उसके साथ मैं खेलता और वो भी जैसे अपना समूचा प्यार उड़ेल देना चाहती थी।

गिवाई से प्राप्त दूध को बेचने से कुछ आमद होने लगी थी। बचे हुए दूध से ईजा घी बना लिया करती, यह बात वर्ष 1980 की है। तब मैं सातवीं कक्षा में था।

मुझे स्कूली शिक्षा के दौरान दो विषय सदैव असहज लगे- गणित और ड्राइंग एंड पेन्टिंग। गणित में तो मैंने बहुत मेहनत की। सतत अभ्यास किया लेकिन दसवीं कक्षा तक मेरी रुचि गणित में उत्पन्न न हो सकी।

यह बात अलग है कि जयपुर आकर हायर सेकंडरी के पश्चात् 1984 में जब कामर्स कालेज में बी.कॉम प्रथम वर्ष में प्रवेश लिया तो मुझे नवीं कक्षा के एक विद्यार्थी को गणित का ट्यूशन पढ़ाने का काम मिला वो भी पिचहत्तर रूपए प्रतिमाह में। मैंने स्वयं गणित पढ़ी। उस समय राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड में गणित की डंडिया-माथुर की किताब पढ़ाई जाती थी। मैंने पुस्तक खरीद कर गणित के प्रत्येक अध्याय को स्वयं पढ़ा। प्रत्येक अध्याय के प्रश्नों को हल किया। इसका यह फायदा हुआ कि गणित में मेरी मास्टरी हो गई। बाद में चलकर यही विषय मेरा प्रिय विषय बन गया लेकिन ड्राइंग एंड पेन्टिंग में हमेशा कमजोर ही रहा। आज भी

इस विषय में मैं स्वयं को कमजोर ही मानता हूँ।

सातवीं की वार्षिक परीक्षा निकट थीं। अन्य विषयों की भाँति ड्राइंग एंड पेन्टिंग का भी पेपर था जिसे उत्तीर्ण करना अनिवार्य था लेकिन तब तक मैंने कलर बॉक्स नहीं खरीदा था। परीक्षा से कैसे बचें सम्भव न था। बंशी धर खुल्वे जी ड्राइंग-पेंटिंग के अध्यापक थे। एक दिन उनके द्वारा सख्त हिदायत दे दी गई। तीन दिन पश्चात् ड्राइंग-पेंटिंग का टेस्ट होगा, प्रत्येक विद्यार्थी ड्राइंग शीट, कलर बॉक्स एवं ब्रश लेकर अनिवार्य रूप से आएगा, कहते हुए खुल्वे सर उस दिन स्टाफ रूम में चले गए थे। मेरे पास कलर बाक्स न था।

उस दिन स्कूल के शेष समय में इसी सोच विचार में रहा कि टेस्ट कैसे दूँगा। स्कूल से घर लौटते समय भी इसी उधेड़-बुन में लगा रहा कि बिना कलर-बॉक्स के कैसे होगा, क्या होगा ?

उस दिन रास्ते भर के प्राकृतिक नजारों ने मुझे अपनी ओर आकर्षित न किया, मेरे अन्दर तो विचारों का अलग ही झंझावात चल रहा था।

घर आया। आँगन में ही ईजा मिल गई। मेरा उदास चेहरा देख वो चिन्ता में डूब गई। तपाक से पूछने लगी ‘क्या बात है? किसी ने कुछ कहा तो नहीं?’

मैं कुछ न बोला, ईजा के चेहरे पर चिन्ता के भाव उमड़ पड़े थे। अब मैं अधिक देर तक चुप न रह सका। ड्राइंग-पेंटिंग टेस्ट के लिए कलर बॉक्स, ब्रश न होने का जिक्र ईजा से कर दिया, थोड़ी देर के लिए ईजा के चेहरे पर चिन्ता की लकीरें उभर आई थीं तभी स्वयं को संयत करते हुए कहने लगी- “तू फिकर न कर!! भो मासी जाबे ली है ये। गिवाई दूधक घ्यउँ छौ इकें ले बेची हयै।” (तू चिन्ता न कर!! कल मासी (बाजार) जाकर ले आना। गिवाई के दूध से बना घी है इसे भी बेच आना)

उन दिनों स्टेशनरी एवं आवश्यक सामान के लिए मासी जाना पड़ता था। हमारे गाँव से यही कोई चार साढ़े चार किलोमीटर का रास्ता पैदल ही चलना होता था। पहाड़ों पर यह दूरी समतल मार्ग से तय नहीं की जाती। पगडंडियों को पार करते हुए ऊँचाई और फिर निचाई, फिर चढ़ाई पर चलते हुए जंगल को पार करते हुए मासी पहुँचा जाता था।

अगले दिन मासी को रवाना हुआ। मेरे हाथ में गाय के घी का एक बर्तन था, जिसे बेचना था और मुझे कलर बॉक्स और घर के लिए कुछ जरूरी सामान खरीदना था। उस दिन उबड़-खाबड़ सड़क पर चलते हुए दूर खेतों में काम कर रहे लोगों के कण्ठ से

निकली स्वर लहरियों और उनसे गूँजती घाटी, चीड़ के पेड़ पर बैठा बांसुरी बजा रहा युवक, पेड़ों पर बैठी चिड़ियाओं की चहचहाहट, उस मार्ग पर आ-जा रहे लोग किसी ने भी अपनी ओर आकर्षित नहीं किया। न ही मैं कहीं रुका। मेरा ध्यान हाथ में थामे घी के बरतन पर था जिसे बेचकर मुझे वापिस घर आना था।

मासी जाकर कई दुकानों पर घी खरीदने का आग्रह किया, लेकिन दुकानदार-अभी तो है, घी की तासीर ठीक नहीं लग रही कह मुझे टरकाते रहे। दोपहर होने को थी। मैंने भी हार न मानी और चारा भी क्या था भला? केवल एक ही लक्ष्य था-हाथ में थामे घी को बेचना है। एक मन हुआ, चलो बहुत हुआ वापिस घर चलते हैं। लेकिन तभी टेस्ट के लिए कलर बॉक्स खरीदने का विचार आते ही मैं ठिठक सा जाता। इधर कलर बॉक्स भी नहीं खरीदा गया था। खरीदता भी तब जब घी बिकने से कुछ रुपए मिल जाते। बिना घी बेचे कलर-बाक्स न खरीद पाने का ध्यान आते ही मैं घोर निराशा में डूब जाता।

दोपहर का सूरज सिर पर था। सूरज की तपन से बाजार में लोगों की आवा जाही कम होने लगी थी लेकिन मुझे मेरा लक्ष्य तक न पहुँच पाने का मलाल था। तभी मासी के तल्ला बाजार की तरफ नजर चली गई। मेरे पाँवों में जैसे नई जान आ गई हो।

मैंने मासी के तल्ला बाजार की तरफ रुख किया और उस समय के कपड़े के प्रसिद्ध व्यवसायी मोहन सिंह बिष्ट एण्ड सन्स क्लॉथ स्टोर के काउन्टर पर चला गया, “च्यला! यो हाथम क्या छू।”

“घ्यउँ। गोरू घ्यउँ छौ” (बेटा ! यह हाथ में क्या है ? घी गाय का घी)

मेरा जवाब सुनकर काउन्टर पर बैठे सज्जन ने इशारा कर हाथ में थामे घी के बरतन को अपने हाथ में ले लिया। और उसका ढक्कन खोलते हुए थोड़ा सा घी अपनी हथेली पर रख पहले पूरी हथेली में फैलाया फिर सूँघने लगा मानो घी की तासीर देख रहा हो। फिर बर्तन एक तरफ रख गल्ले से पच्चीस रुपए निकाल मेरी तरु बढ़ा दिए।

घी बिक चुका था। तब एक लीटर घी की कीमत यही थी। मेरी प्रतीक्षा आखिर पूरी हो ही गई थी। उस समय मुझे ऐसा महसूस हुआ मानो बहुत कुछ मिल गया।

घी बेचने से प्राप्त रुपए से मैंने कलर बॉक्स, ब्रश और घर के लिए कुछ सामान खरीदा और शाम तक घर वापिस लौट आया था।

कलर बाक्स यद्यपि महज सवा रुपए कीमत का था। उस समय घर में सवा रुपए नकदी भी थी या नहीं। ईजा ने यह न बताया। बस इतना ही कहा, “मासी जाकर घी भी बेच देना,” अब सोचता हूँ शायद ईजा के पास नकदी न होगी लेकिन मेरे बाल मन पर क्या असर पड़ेगा ये सोचकर मुझे पर जाहिर न होने दिया।

गिवाई गाय से एक आत्मिक सम्बन्ध तो हो ही गया था, जब भी वो आते-जाते मुझे देखती रंभाने लगती, उसके कान खड़े हो जाते या वो पूँछ हिलाने लगती।

लेकिन अफसोस! कहते हैं न कई बार ईश्वर एक साथ अनेक परीक्षाएं लेता है। इधर बूबूजी की मृत्यु हो गई थी। कुछ ही महीनों बाद एक दिन गिवाई भी जंगल में घास चरने जाते समय अचानक फिसल गई और गहरे गंधेरे (खाई) में ऐसे गिरी कि प्राण पखेरु उड़ गए। ईजा और मुझे सायंकाल को मालूम हुआ तो हम एक-दूसरे को देख बिलख पड़े, मानो सबकुछ लुट गया था। बूबू के बाद एक गिवाई ही थी जो घर में तीसरे सदस्य की तरह ही थी, वो भले ही बेजुबान थी लेकिन उसके साथ ईजा अनेक बार अपना दुःख-दर्द बतियाती थी और वो एक टुक जैसे सब कुछ सुनती रहती थी। गिवाई हमारे लिए केवल दूध देने वाली एक गाय ही न थी वो हमारे परिवार का ही सदस्य थी।

उस रात हमने चूल्हा न जलाया, गिवाई की मौत से ईजा और मैं दोनों अन्दर तक टूट चुके थे।

मैं कई दिनों तक कभी घास तो कभी लकड़ी और कभी क्रिकेट के बल्ले की लकड़ी की तलाश में उस गंधेरे की तरफ चला जाता जहाँ गिवाई की मृत पड़ी थी। दूर से ही उसकी तरफ देखता रहता। कुछ ही दिनों में गिद्धों और कुत्तों ने उसके शरीर से माँस नोंच उसे कंकाल में बदल दिया था।

मेरी आत्मा चीत्कार कर उठती लेकिन मैं उसके आस-पास इसलिए जाता, मुझे लगता कि गिवाई अभी भी कहीं वही है जो मुझे देख रंभाने लगेगी।

उसका कंकाल देखकर ही मुझे उसके होने का एहसास होता और मैं देर तक उस तरफ देखता रहता। उसके सींग मुझे अपनी ओर आकर्षित करते हुए से लगते जिन पर कई बार मैं झूल जाया करता और वो चुपचाप सिर आगे कर देती।

उन दिनों मुझे क्रिकेट खेलने का बेहद शौक था, क्रिकेट का

बल्ला बनाने के लिए छोरी गंधेरी (खाई) में बहुत से जामुन के पेड़ थे। यह वही गंधेरी थी जिसमें गिवाई गिर कर मृत्यु को प्राप्त हुई थी। चारों तरफ जामुन और चीड़ के पेड़ों से घिरी हुई गहरी खाई, घास इतनी घनी कि कोई जंगली जानवर छिप कर बैठा भी हो तो मालूम न चले लेकिन गिवाई का मोह और क्रिकेट का बल्ला बनाने का लालच उस गहरी खाई में ले गया था।

मैंने कुल्हाड़ी से एक मोटा तना काट लिया था और उसे बल्ले की तरह शोप देने लगा। तभी मेरे कानों में अचानक गिवाई के रंभाने की आवाज माँ--- गूँज उठी। महसूस हुआ पूरी घाटी में यह आवाज गूँजी है।

मैंने एक हाथ में पकड़े बल्ले से ध्यान हटा कर करीब दो सौ मीटर दूरी पर पड़े गिवाई के कंकाल की तरफ देखा। वहाँ तो सिर्फ उसका कंकाल था। उस समय मैं कुल्हाड़ी से जामुन के मोटे तने को बल्ले का आकार देने का काम कर रहा था। ध्यान गिवाई के कंकाल की तरफ था और कुल्हाड़ी का वार बाएं हाथ से पकड़े जामुन के तने की बजाए मेरी मध्यमा अंगुली पर पड़ा, एक गहरा घाव हो गया था। ‘ओ ईजा --!!’ कहते हुए मेरी चीख निकल गई थी। तेजी से रक्तस्राव होने लगा। मैं वहाँ अधिक देर ठहर न सका, उठकर सीधे घर की तरफ बढ़ गया। घाव इतना गहरा था कि कई दिन लग गए ठीक होने में। उस घाव की निशानी आज भी मेरी अँगुली पर बनी हुई है। जब भी मेरी नजर वहाँ जाती है गिवाई के साथ व्यतीत किए गए अल्प समय की अनगिनत यादें मेरे सामने आकर मुझे रुला जाती हैं।

आज जब मैं पचपन को पार कर चुका हूँ। दो बेटों का बाप हूँ। आज न ईजा रहीं न गिवाई लेकिन जब भी उन दिनों को याद करता हूँ तो आँखें छलछला जाती हैं। सोचता हूँ काश! कोई मेरा बचपन लौटा दे। लेकिन यह भी जानता हूँ

कि गुजरा हुआ जमाना आता नहीं दुबारा -----।

बस मन मसोस कर रह जाता हूँ और अपने बचपन की किसी अन्य मधुर स्मृति में खो सा जाता हूँ।

खैर उस दिन के बाद मैं फिर दोबारा उस गंधेरे की तरफ नहीं गया।

(मेरा बचपन शीर्षक से शीघ्र प्रकाश्य संस्मरण आधारित पुस्तक में सम्मिलित किया गया संस्मरण)



अम्बिकादत्त
RAS (R)

2 बी-II न्यू कॉलोनी, गुमानपुरा, कोटा



उन दिनों मैं राशनकार्ड बनाने वाले महकमे में था। सब जानते हैं राशनकार्ड कितना जरूरी है और राशनकार्ड बनवाना कितना मुश्किल। राशनकार्ड बन जाए और उसमें कोई गलती रह जाए तो उसे दुरुस्त कराना और भी ज्यादा मुश्किल है।

दफ्तर में कई लोग आते रहते थे। अपनी फरियाद और शिकायतें लेकर। कई मिलने वाले या उनके फोन भी आते रहते थे। महकमे के लोग मुंह देखी बात करते थे। सब अपने-अपने फन के माहिर, अपने-अपने काम के उस्ताद। किस से कैसे निपटना है, किसको कैसे निपटाना है ये उनसे बेहतर कोई नहीं जानता था। उन सब के बीच मुझे रहना था। रह रहा था। कैसे ? यह छोड़िए।

एक दिन ऐसे ही लंच से थोड़े पहले का वक्त था। मुझे अपने कमरे के बाहर थोड़ी गरबराहट सुनाई दी। मुझे पता था दरवाजे पर जो चपरासी दरबान था-वो इस महकमे का न था पर बरसों से अपने रसूखात की दम से प्रतिनियुक्ति का जुगाड कर-कर के यहीं टिका था। वह 'ऐसे ही' किसी को भी मुझसे मिलने न देता था। उसे शायद हनुमान चालीसा की इन पंक्तियों का सरलार्थ ठीक से पता था-“राम दुवारे तुम रखवारे, होत न आज्ञा बिनु पैसारे”। कई बार मुझ तक पहुँचने वाले आदमी की मदद के लिए मुझे उस तक पहुँचना पड़ता था। उस दिन भी मैंने दखल दिया और कहा “कौन है ? अन्दर आने दीजिए।”

थोड़ी देर में वो अन्दर आया! एक साधारण सा मजदूर किस्म का ऐसा आदमी जिसकी जिन्दगी की बहुत सारी जरूरतों और सहूलियतों के लिए राशन कार्ड की दरकार होती है। उसका हुलिया वैसा ही था। अब मैं फिजूल ही उसका वर्णन यह कह कर करते हुए कि..... उसके बाल बिखरे हुए थे....., आंखें बुझी-बुझी सी थीं..... या चेहरे का रंग उड़ा हुआ था....., कपड़े फटे से अस्त व्यस्त थे , पावों में जूते-चप्पलें..... वगैरा वगैरा....., क्यों आपका वक्त बरबाद करूं।

उसके हाथ में राशन कार्ड था-यह मैं उसके घुसते ही समझ गया था। वह उसे इस तरह पकड़े हुए था, जैसे उस पस्त हिम्मती में डुबते हुए को बस इस तिनके का ही सहारा था।

मैंने पूछा “ क्या हुआ ? क्या है ? ”

“मेरा इस राशनकार्ड में नाम गलत हो गया। ‘उसने हाथ में पकड़ा हुआ राशनकार्ड मेरी तरफ बढ़ाते हुए कहा।

“हूँ - कैसे ? ” मैंने उसके हाथ से राशनकार्ड लेकर देखते हुए पूछा। उसके हाथ से राशनकार्ड लेने और उसकी बात पर तवज्जह देने से शायद उसमें थोड़ी हिम्मत आ गई थी।

वो बोला-“हुजूर मेरा नाम मांगीलाल है और इस राशनकार्ड में भागीलाल छप गया है।” मैंने देखा वाकई उसके नाम के पहले अक्षर मा की ऊपर की रेखा गायब थी और वो भा पढ़ा जा रहा था। जरूर प्रिन्ट मिस्टेक थी।

मैं अपने अनुभव से अच्छी तरह जानता हूँ कि जिस तंत्र में-आपको आपके जानने-पहचाने वाले हाकिम के सामने रूबरू साक्षात, सदेह खड़े होकर, बातें करते रहने के बावजूद, जीवित होने का कागजी प्रमाण-पत्र लाकर देना पड़े, उस तंत्र में, इस बिचारे गरीब मांगीलाल के राशनकार्ड में, इसका नाम मांगीलाल के बजाय भागीलाल छपा होने पर, कैसी-कैसी मुसीबतों का सामना करना पड़ रहा होगा। गेंहू-चीनी, घासलेट या और कुछ तो छोड़िए ये बिचारा इस दुनिया में आया है और अभी मौजूद है, ये तक साबित नहीं हो सकता था, अगर मांगीलाल के राशनकार्ड में भागीलाल छपा हुआ हो तो किसकी मां ने दूध पिलाया है जो एक छोटी सी लाइन को पूरा करके भा को मा बना दे। बिचारा, नरेगा में, बैंक में, पंचायत में, तहसील में, राशन की दुकान पर, अस्पताल में कहां-कहां धक्के नहीं खा चुका होगा।

“बाबू साब इसकी वजह से भमासा (भामाशाह) कार्ड भी नहीं बना। ‘आधार’ भी नहीं। ”

एक जरासी गलती की वजह से आधारकार्ड तक न बन पाने

से निराधार हुए मांगीलाल के लिए मेरे मन में सहानुभूति जाग चुकी थी और वो करुणा की सीमा में प्रवेश करती इससे पहले मैंने घंटी बजाई-चपरासी को संबंधित बाबू को बुलाकर लाने को कहा और कुछ देर प्रतीक्षा करने के पश्चात, मात्र यह सूचना पा सका कि बाबूजी तो लंच में चले गए।

हाय रे ! भागीलाल हो चुके मांगीलाल का भाग्य ! लंच के तुरंत बाद मुझे एक वीडियो कान्फ्रेंसिंग में उपस्थित होना था। जिसमें महकमे के प्रमुख सचिव राशनकार्डों से संबंधित काम के आंकड़ों की समीक्षा करने वाले थे।

मैं मांगीलाल को उस रामदूत दरबान के हवाले करके और उसे यह निर्देश देकर कि लंच के बाद जब बाबूजी आ जाएं तो इसका काम करवा देना, दफ्तर से प्रस्थान कर गया।

जीवन के बयाबान में, दफ्तर के घमासान में, कई घटनाएं होती हैं। कई लोग मिलते हैं। आते हैं, जाते हैं। हम सबको कहां याद रख पाते हैं। समय के प्रवाह में बहुत कुछ बह जाता है। बहता रहता है। हम भूल जाते हैं। मांगीलाल भी आया था। मिला। पर वो याद कैसे और क्यों रहता अगर वो मुझे दुबारा न मिलता।

जब सरकारी सहायता या राहत के सस्ते गेहूं, चीनी, घासलेट पाने वालों की संख्या, उनके जनसंख्या के मुकाबले वास्तविक प्रतिशत से कई गुना ज्यादा बढ़ गई। डुप्लीकेट राशनकार्ड बनाने और बनवाने वालों की मौज होने लगी, राशन सामग्री की चोर बाजारी, काला बाजारी की खबरें सुन-सुन कर कई दूसरे चोरों की लार टपकने लगी। दलालों, मीडियावालों, एजेंटों वगैरा को इस बहती गंगा में हाथ धोने की पुण्याकांक्षाएं प्रबल होने लगीं। तो सबने हल्ला मचाया। अखबार छपे। अखबार बोले, टीवी बोला। इतना ही नहीं, विधानसभा तक इसकी गूंज सुनाई दी। विधायक जी ने अनुयायियों में से कई, इस बहती गंगा में आचमन कर लेने की अपेक्षा के रहते नियोजन न होने से, निराश हो गए थे। सो प्रजातंत्र में बहती भ्रष्टाचार की सहज सरिता में कुछ असन्तोष की लहरों का उफान आना स्वाभाविक था।

कार्यवाही शुरू हुई, महकमे में कागजी घोड़े दौड़ने लगे। जो भ्रष्टाचार में सहयोगी थे वे ही उसे रोकने के औपचारिक-दिखावटी निरीक्षणों के लिए तत्पर, सक्रिय हो उठे। विजीलेंस, सतर्कता, उडनदस्ते और वगैरा-वगैरा, जो हो सकता था। वो सब हो रहा था। राशन की दुकानें चेक करने के टारगेट तय कर दिए गए, रोजाना तीसरे पहर, सूचना भिजवानी पड़ती थी।

सुबह ही तय हो जाता था-किसको कहां जाना है। इस बात का पता, सिवाय उस राशन डीलर के, जिसका निरीक्षण होना है - किसी को नहीं चलता था।

ऐसी ही एक दुकान का मैं अपने दल-बल सहित निरीक्षण करने पहुंचा। सारी चीजें व्यवस्थित ही नहीं सुव्यस्थित थी। रजिस्टर्स, आंकड़े, गोदाम, स्टॉक वगैरा। उपभोक्ता अनुशासित तरीके से लाइन में लगे राशन का गेहूं ले रहे थे। शायद मन ही मन जानते समझते होंगे कि यदि आज किसी भी तरह से राशन डीलर के खिलाफ कोई शिकवा या शिकायत जाहिर की, तो पता नहीं कितने दिन, फिर उसका परिणाम भुगतना पड़े।

अचानक मेरी निगाह लाइन में लगे एक आदमी पर पड़ी। मुझे वह चेहरा कुछ पहचाना सा लगा। मैंने अपनी याददाश्त पर जोर डाला। मुझे वो जरा सी चूक या गलती याद थी-जो एक जरासी शिरोरेखा के अभाव में किसी आदमी के जीवन को गहरे तक प्रभावित कर सकती है, इन्ट्रेस्टिंग होने के कारण थोड़ी छाप स्मरण थी। पुर्नस्मरण करने पर किस्सा याद हो आया। अरे ! यह वहीं मांगीलाल था-जिसका नाम राशनकार्ड में भागीलाल छप गया था, और अपनी यही परेशानी लेकर दुरुस्ती के लिए वो मुझसे मिला था।

मैंने आगे बढ़कर उससे कहा-“आपका राशनकार्ड दिखाना”। वो हाथ में ही लिए था। उसने आगे बढ़ा दिया। मैंने खोलकर देखा। यह वही राशनकार्ड था। इसमें अभी भी भागीलाल छपा हुआ था।

मैंने उससे पूछा - “तुम्हारा क्या नाम है ” ?

“भागीलाल।” उसने तत्परता से जवाब दिया।

उसकी आँख में, पुराना-परिचय था या सर्वथा अपरिचय ? वह विस्मित था या गद्गद्। उसके अंदर आश्वस्ति थी या आशंका यह जान पाना या इन विरोधी भावों की विभाजन रेखा चिन्ह पाना संभव न था। फिर भी। राशनकार्ड हाथ में लिए लिए ही पूछा -“तुम्हारा असली नाम भागीलाल है ? या कुछ और है ?”

निरीक्षण दल के सदस्य इसे मेरी सतर्क चातुरी दृष्टि, सजगता या जो भी समझ रहे हों, पर काफी लोगों के साथ उनके भी चेहरों पर थोड़ा आश्चर्य और थोड़ी शंका के मिले-जुले भाव थे।

उसके अन्दर, सहज पुर्नस्मरण, जो तिरोहित नहीं हुआ था, किन्तु प्रकट भी नहीं हुआ था.. अब तक.. अब पूर्व परिचय के बल पर किंचित आश्वस्त होकर संवाद में सम्प्रेषित हुआ। वो

औपचारिक भद्रजनों की अभिजात्य भाषा शैली तजकर अपने स्वाभाविक प्राकृतिक अन्दाज में उपस्थित था।

” नांव तो म्हारो मांगीलाल ई छो..... म्हुं आपसूं बी तो मिल्यो छो घणो फिर्यो पण कोई नं होयो....कोई ने भी नं सुणी भाग-भाग र थाकग्यो जद म्हनै म्हारो नांव..... मांगीलाल क बज्याई भागीलाल ई रखणल्यो । अब म्हारो नांव भागीलाल ई छै।”

(नाम तो मेरा मांगीलाल था। मैं आपसे भी मिला था। खूब घूमा। कुछ भी नहीं हुआ । भाग-भाग कर थक गया तो मैंने मेरा नाम मांगीलाल के बजाय भागीलाल ही रख लिया। अब मेरा नाम भागीलाल ही है।)

उसने अपने पास से निकालकर अपना भामाशाह कार्ड और आधार कार्ड भी मुझे दिखाया। उसमें उसका फोटू भी था और नाम भागीलाल ही था।

मैं कोई पेशेवर कहानीकार नहीं हूँ। एक जैसा-तैसा कवि हूँ। वो भी पेशेवर नहीं। मैं नहीं जानता कि कोई किस्सा या कहानी कैसे शुरू की जाती है-कैसे उसका विकास या निर्वाह आगे किया जाता है-और सबसे मुश्किल काम कि कहानी का अन्त कैसे किया जाए यह भी मुझे मालूम नहीं है-इसलिए मैं इतना कहकर अपनी बात खत्म करता हूँ कि-किस्सा बस इतना ही है। आगे मेरे पास न तो कुछ करने को था और नही कुछ अब कहने को है ।



जवाहर सागर बांध, कोटा



दीपावली स्नेह मिलन समारोह-2022

हर्षोल्लास के पल



हर्षोल्लास के पल





हर्षोल्लास के पल





हर्षोल्लास के पल





हैप्पी मदर्स डे



हरिशंकर गोयल “श्री हरि”

सेवानिवृत्त
आर.ए.एस.



आज सुबह जैसे ही मेरी नींद खुली, श्रीमती जी ग्रीन टी लिए खड़ी थीं। मैं अपने सौभाग्य पर इतराया कि सुबह सुबह देवी जी के दर्शन हो गए। “अरे, हम तो धन्य हो गये।” जिस दिन सुबह सुबह श्रीमती जी के दर्शन हो जाते हैं वह दिन मेरे लिए बहुत लकी होता है। हम दोनों ने मुस्कुरा कर एक दूसरे का अभिवादन किया। मैंने कहा, “हैप्पी मदर्स डे”

वो एकदम से उछल पड़ीं। झिड़कते हुए बोली, “मैं आपकी मम्मी थोड़े ही हूँ जो आप मुझे हैप्पी मदर्स डे कह रहे हैं”

मैंने कहा, “भार्ये। माना कि आप मेरी मम्मी नहीं हो मगर हमारे दो अनमोल रत्नों की तो “मदर” हो। फिर तो हैप्पी मदर्स डे कहना बनता है ना” ? हमने थोड़ा मस्का लगाते हुए कहा।

“अनमोल रतन बोलें तब तो ठीक है, आप कहते हुए अच्छे नहीं लगते हो” वो मुस्कुराते हुए बोली। उनके मुस्कुराते ही हमारी जान में जान आ जाती है अन्यथा सांसें अटकी सी रहती हैं। हमने अपना ज्ञान बघारने के लिहाज से कहा “भाग्यवान। आपने भारतीय शास्त्रों का मर्म जाना ही नहीं है। हमारे शास्त्रों में एक श्लोक बहुत बढिया लिखा है जो केवल और केवल धर्म पत्नियों के लिए ही बना है। वह इस प्रकार है”

त्वमेव माता च पिता त्वमेव ।

त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव ॥

त्वमेव विद्या द्रविडम् त्वमेव

त्वमेव सर्वम् मम देव देव ॥

“इसलिए आप तो माता पिता, बंधु, सखा, धन दौलत सब कुछ हो ”। हमने मुस्कुराते हुये कहा।

बात बदलने में हमारी श्रीमती जी बहुत माहिर हैं। मैं राजनीति की बात कर रहा होता हूँ तो वे किसी “अनुपमा” नामक धारावाहिक की बातें करने लग जाती हैं। आज भी वे बात बदलते हुए बोलीं, “अर्जुन और नकुल अभी सो ही रहे हैं क्या” ?

उनके कहने के बाद मेरा ध्यान अपने दोनों नौनिहालों पर गया। अभी तक कहीं नजर नहीं आ रहे थे वे। जाहिर है कि वे सो ही रहे होंगे। मुझे डर लगा कि कहीं वो ये ना कह दें “पूरे पापा पर गये हैं। जब बाप दोपहर तक सोएगा तो बेटे भी उन्हीं का अनुसरण करेंगे”। वे कुछ बोलतीं उससे पहले ही मैंने कहा “शायद अभी सो रहे हैं। अगर आपका हुक्म हो तो अब जगा दें” ?

वे तुरंत बोलीं, “ना ना ना। कैसे निर्दयी हो ? सोने भी नहीं देते उनको। पता नहीं रात में न जाने कब सोये हैं ” ?

इसे कहते हैं चित भी मेरी, पट भी मेरी और अंटा मेरे बाप का।

पत्नी को समझ पाना बहुत मुश्किल है। पल में तोला तो पल में माशा की तरह नजर आती है। अब मेरे समझ में आ गया कि मां आखिर मां ही होती है। अपनी सारी ममता अपनी औलाद पर लुटा देती है। अपनी संतान को अधिकतम सुख देने का भरसक प्रयास करती है वह। इसके लिए वह खुद कष्ट सह लेगी पर संतान को कष्ट उठाने नहीं देगी। मैंने उसके ममत्व को मन ही मन प्रणाम किया।

सुबह के सात बज चुके थे। घर का सारा काम पड़ा हुआ था। दोनों बच्चे अभी तक सो रहे थे। मैंने उन्हें जगाना चाहा लेकिन उन्होंने फिर से मना कर दिया। मैंने कहा कि “ठीक है, सोने दो इन्हें। ऐसा करते हैं कि सफाई तुम कर लो और नाश्ता मैं बना दूंगा”। हमने थोड़ा और मस्का लगाया। वैसे भी RAS अधिकारी मस्का लगाने में माहिर होते हैं।

मेरी इस अप्रत्याशित बात पर वह कहने लगी। “बड़ा लाड़ आ रहा है आज तो। कोई खास बात है क्या” ? अब वह भी फुल मूड में आ गई थी।

“अजी, बहुत खास बात है। आखिर मदर्स डे जो है आज। आज तो संपूर्ण नारी जाति को नमन करने का दिन है”। हमने थोड़ा लाड़ लड़ाते हुये कहा।

इतना सुनकर वह हमेशा की तरह मुस्कुराई और कहने लगी

“तुम लेखक गणों की यही तो खासियत है कि डंडा भी मारते हैं तो मखमल में लपेट कर”। मैं समझ नहीं पाया कि वह प्रशंसा कर रही है या डंडा मार रही है?

अब हम भी अपने काम को बखूबी अंजाम देने के लिए जी जान से जुट गये। नाश्ते में सूजी का हलवा बना दिया तर घी वाला। वह प्रसन्न हो गई। हम जब भी कुछ बनाते हैं तो वे बहुत खुश होती हैं। उन्हें खुश देखकर हमने “नाश्ता” बनाने का “मेहनताना” मांग लिया तो वे बिफर गई और कहने लगीं

“कैसा मेहनताना? खीर, हलवा, पूरी खा-खा कर पेट बाहर निकल आया है आपका। अब क्या कुंभकर्ण बनोगे? उसने ताना मारते हुये कहा।

मैं चौंका। क्या मेरा पेट वाकई बाहर निकल आया है?

अचानक मुझे याद आया कि सन् 2006 का पैन्ट और शर्ट है अभी मेरे पास। ऐसे समय के लिए ही तो रखे हैं ये दोनों। जब जरा भी आशंका हो तो तुरंत चैक कर लो। हमने इस नुस्खे को आजमाने का मन बना लिया। कमरे में जाकर उन्हें पहनकर देखा तो दोनों कपड़े फिट आये। बड़ा संतोष हुआ कि 2006 की स्थिति अभी तक बरकरार है। ये वाला मेरा प्रयोग बहुत अद्भुत है। मेरे कई मित्र अपना चुके हैं इसे। आप चाहें तो आप भी आजमा सकते हैं।

दिन के 11 बजे चुके थे। अर्जुन और नकुल तैयार होकर आ चुके थे। अल्पाहार करके वे दोनों अपनी मां के साथ फोटो खिंचवाने में व्यस्त हो गये। मैंने पूछा कि आज ये फोटो सेशन किसलिए?

दोनों एक साथ बोले, “पापा, आज मदर्स डे है ना। मम्मी के साथ अलग अलग पोज में फोटो खिंचवा कर फेसबुक पर अपलोड करनी है। अलग-अलग ग्रुप्स में अलग अलग फोटो भेजनी है। तभी तो मदर्स डे का मजा आयेगा”। तीनों फिर से फोटो सेशन में व्यस्त हो गए।

लंच के बाद श्रीमती जी बर्तन साफ करने लग गई। जब से जगी हैं तब से ही धांय धांय काम पर लगी हुई हैं। मैंने छेड़ते हुए फिल्म ‘प्यार किये जा’ का जनाब मोहम्मद रफी साहब की आवाज में ये गीत गाना प्रारंभ किया

“गोरे हाथों पे ना जुल्म करो ।

हाजिर है ये बंदा, हुकुम करो ।

तुम्हारी कंवारी कलाई को चोट ना लगे ॥”

श्रीमती जी बोलीं, “आपको तो हर वक्त मजाक ही सूझता रहता है। कभी सीरियस भी हुआ करिए न”?

मैंने कहा, “अजी जिंदगी खुद एक मजाक ही है। इसे मजाक समझ कर ही गुजारना चाहिए। चलिए, मैं थोड़ा हाथ बंटा देता हूँ आपका”।

“धत्। आप भी ना, फालतू बातें करते रहते हैं”। उसने झिड़कते हुये कहा।

मैंने कहा, “अर्जुन और नकुल को बुला दूँ? वे हाथ बंटा देंगे। वैसे भी आज मदर्स डे है तो उन्हें आपकी हैल्प करानी चाहिए”।

और मैंने अपने दोनों ‘सपूतों’ को आवाज लगाई। दोनों हाजिर हो गये। मैंने कहा, “घर के काम में मां का हाथ बंटाओ”।

वे बोले, “पापा, आज तो हमको बिल्कुल फुर्सत नहीं है”

मैंने कहा, “ऐसा क्या पहाड़ खोद रहे हो दोनों”

“पापा, आज तो हम दोनों बहुत बिजी हैं। फेसबुक पर मदर्स डे मनाया जा रहा है। हमारे सारे दोस्त अपनी अपनी मम्मियों के साथ अपने अपने फोटो शेयर कर रहे हैं। कोई अपने बचपन की स्मृतियां शेयर कर रहा है तो कोई मां पर कविता लिख कर शेयर कर रहा है। मेरे कुछ दोस्त तो वीडियो कांफ्रेंसिंग से अपनी अपनी मम्मियों से बात करवाने का भी प्लान कर रहे हैं। केक काटने का भी प्रोग्राम है। मदर्स डे की और भी बहुत सारी तैयारी करनी है अभी। इसलिए हमें तो आज बख्शा ही दो”।

बच्चों का यह व्यवहार हमें बहुत बुरा लगा। मम्मी की कोई हैल्प कराएंगे नहीं बल्कि उसका काम और बढ़ाएंगे और दिखावे को मदर्स डे मनायेंगे। जी तो कर रहा था कि दोनों की वहीं सुंताई कर दूँ मगर श्रीमती जी के घूरते हुए दोनों नेत्र देखकर शांत रह गये।

श्रीमती जी ने कहा, “करने दो ना बच्चों को अपने हिसाब से ? जब देखो तब उन्हें हर दम ही टोकते रहते हो”।

मैंने मन ही मन सोचा कि सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद हाई कोर्ट तो बेचारा ही लगने लगता है। कोई मूर्ख ही होगा जो सुप्रीम कोर्ट के बाद कार्यवाही के लिए हाईकोर्ट जायेगा।

मैंने भी कह दिया “लगे रहो मुन्ना भाई” शाम हो गई। दोनों बच्चे केक ले आये और केक काट कर मदर्स डे मनाने लगे। हम चारों लोग डान्स करने लगे

“एक दूसरे से करते हैं प्यार हम
एक दूसरे के लिए बेकरार हम
एक दूसरे के वास्ते मरना पड़े तो
हैं तैयार हम ।”

दो घंटे खूब हो हल्ला मचा । हम तीनों खाना खाने बैठ गये । श्रीमती जी खाना बनाने लगीं । गरमा गरम बेढई, जलेबियां, रबड़ी। भई वाह। मजा आ गया। खाना खाकर नकुल और अर्जुन अपने अपने मोबाइल में बिजी हो गये। मैंने श्रीमती जी से कहा कि मैं खाना बना देता हूँ, आप गरम-गरम खाना खा लो। वह ना नुकुर करती रही मगर इस बार मैं दृढ़ प्रतिज्ञ था। उन्हें डाइनिंग टेबल पर बैठा कर गरम गरम बेढई बनाने लगा। श्रीमती जी पानी का गिलास भरना भूल गई थी। अचानक उन्हें ठसका लगा। मैं बेढई तलने में व्यस्त था। अर्जुन और नकुल दोनों ही उसके पास में बैठे थे लेकिन मजाल है जो कोई एक भी बंदा उठकर पानी लाकर मम्मी को दे दें ? मेरा गुस्सा सातवें आसमान पर था। पानी का गिलास भरकर श्रीमती जी को दिया। अब उनको थोड़ा आराम आ गया था। मैं गैस बंद करके आया और अर्जुन तथा नकुल दोनों में खेंच कर एक एक थप्पड़ रसीद किया।

“मूर्खों। फेसबुक और व्हाट्स ऐप पर तो मदर्स डे मनाओगे। दुनिया भर की बकवास करोगे। अपनी डींगें हांकोगे। भारी भरकम शब्दों से मां की प्रशस्ति गान करोगे। शानदार कविताएं लिखोगे। केक काट कर नौटंकी करोगे। मां की फोटो शूट कर दुनिया भर में

ड्रामा करोगे लेकिन मां के काम में कोई मदद नहीं करोगे। पानी का गिलास तक लाकर नहीं दे सकते और बातें बड़ी-बड़ी करते हो। धिक्कार है तुम दोनों पर” श्रीमती जी बीच में बोलने को हुई मगर मैंने आंखें तरेर कर उन्हें चुप करा दिया ।

अर्जुन और नकुल दोनों को अपनी गलती का अहसास हुआ। वे दोनों मेरे पैरों में गिर पड़े और क्षमा याचना करने लगे।

मैंने एक बार फिर से दोनों के एक एक थप्पड़ रसीद किया और कहा कि जब सुप्रीम कोर्ट खुला हुआ हो तो हाई कोर्ट में प्रार्थना पत्र नहीं लगाना चाहिए। इतने बड़े वकील और इंजीनियर हो गये, इतनी सी बात समझ में नहीं आती है तुमको?

दोनों बच्चे अब अपनी मां के पैरों में गिर कर माफी मांगने लगे। मां का गुस्सा तो दूध के उबाल की तरह होता है। पानी के दो छींटे पड़ते ही पैदे में बैठ जाता है। उसने दोनों को गले से लगा लिया।

दोनों पुत्रों को अब यह बात समझ में आ गई कि फेसबुक पर प्रशस्ति गान करने से मां का सम्मान नहीं बढ़ता। मां के उत्तरदायित्व बांटने से मां का सम्मान बढ़ता है। कविता लिखने से मातृभक्ति नहीं होती। मातृभक्ति के लिए मां की देखभाल करनी पड़ती है, सेवा करने से ही मातृ भक्ति होती है। उन दोनों को अकल आ गयी ।

सभी को हैप्पी मदर्स डे ।

जज्बात अलग है पर बात तो एक हैं,
उसे माँ कहू या भगवान बात तो एक है।



आर. ए. एस. क्लब बैडमिंटन प्रतियोगिता



आर ए एस क्लब में 8-9 अक्टूबर, 2022 को बैडमिंटन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें क्लब के मैम्बर्स और बच्चों ने भाग लिया जिनकी आयु 9 वर्ष से 65 वर्ष के बीच की थी। बैडमिंटन प्रतियोगिता में 9 इवेंट का आयोजन किया गया। अधिकांश इवेंट दो लोगों की उम्र को जोड़ कर तय की गयी थी जैसे 75+ डबल्स, 95+ डबल्स, 120+ डबल्स, विमेन डबल्स, मिक्स डबल्स और बच्चों के U-10 से डबल्स U-19 तक लड़के

और लड़कियों के इवेंट थे। प्रत्येक इवेंट में 30 से 40 लोगों द्वारा भाग लिया गया। इस टूर्नामेंट का रोचक एवं आकर्षक मैच दो लोगों की उम्र जोड़कर 120+ डबल्स के मैच रहे। 7 अक्टूबर को सभी मैचों का ड्रा मैम्बर्स के सामने पर्ची द्वारा निकाला गया। 9 अक्टूबर को सभी फाइनल मैच हुए और 20 नवम्बर को मुख्य अतिथि श्री देवाराम सैनी (मुख्यमंत्री, विशेषाधिकारी) और आर ए एस क्लब के अध्यक्ष श्री गौरव बजाड़ की उपस्थिति में बैडमिंटन टूर्नामेंट के विजेता और उपविजेता को प्रतीक चिन्ह ट्रॉफी और मैडल दिये गये।









कविता की दीठ



विजय सिंह नाहटा

सेवानिवृत्त
आर.ए.एस.



अतृप्ति के अनंत रेगिस्तान में
अमृत की अदृश्य बूँद है कविता
तप्त राहगीर के आधार पर
आश्वस्ति का समन्दर बन चमकती।

जीवन की पथरीली राहों पर
दीख पड़ती हर कठिन पड़ाव पर
हरियल कोंपल सी फूटती
सृजन आलोक बन
विराट पथ पर दमकती।

तमाम पराभव और : -----
सकल हानियों से निर्विकार ----निर्लिप्त
कहीं वो रहती आत्मा के अतल में
प्रचंड जीवन -- पौरुष सी खदबदाती

हे ईश्वर!
भले इतनी प्राप्तिओं के ढेर में
बस वही मुझको हासिल हुई
और मैंने भी सर्वस्व दिया सब भेंट
और उस कवि तत्व ने भी दिया मुझको

सहस्रों बार दोनों हाथ
अब सब कुछ छोड़ आगे बढ़ चला हूँ :
अजानी राह जीवन की अकेला ही लिए पाथेय
रह गई केवल अलग छवि से, अलग ढब से
जगत को देखने की एक कवि की आंख।



RAS Club Members Grand Celebration Dandiya



Dandiya By the Ladies For the Ladies of Club Members





Dandiya By the Ladies For the Ladies of Club Members





Dandiya By the Ladies For the Ladies of Club Members





Dandiya By the Ladies For the Ladies of Club Members





कांस्य की थाली



शिवाक्षी खाण्डल

सहायक कलेक्टर, अजमेर



वो कांस्य की थाली
वो काली तम-रात्रि
मानो प्रतिबिंब है
किसी अप्सरा का,
या है उसके वियोग
का प्रत्यक्ष प्रमाण।

मानो घृणा की
चिंगारी लिए
वो तीक्ष्ण अनल
या है किसी
अभिषप्त अहिल्या सी
और प्रतीक्षरत है
रामचंद्र के चरणों की
उस पावन धूल में ।

जैसे स्वर्णपत्र पर
छिडक दी हो
किसी कवि ने
हल्की काली स्याही
या रणक्षेत्र की ओर
अग्रसर वीर योद्धा हो।

मुदित चंद्रिका
तरु-पल्लव संग
मानो क्रीडा के
मैदान में
कभी प्रकट तो
कभी गुप्त हो।
वो कांस्य की थाली
मानो विनीत अरुण
का हो स्पंदन।



RAS Club Musical Extra Vaganza

A Singing Contest
for Members/Spouses/ Dependents 18th Dec., 2022



Glimpses of Singing Contest





Glimpses of Singing Contest





राजीव गांधी ग्रामीण ओलंपिक खेल-2022

खेल रहा है राजस्थान



श्री अभिमन्यु सिंह कुन्तल
एस.डी.एम., अरनोद



खेल रहा है राजस्थान,
खेल रहा है राजस्थान!
गाँव-गाँव के दरमियान
खेल रहा है राजस्थान

उत्तर से दक्षिण तक
पश्चिम से पूरब तक
खेलमय है राजस्थान,
खेल रहा है राजस्थान

खुश मिजाज अब हो रहे हैं
खेलों में सब खो रहे हैं
जात-पात अब भेद नहीं है
हार जीत का खेद नहीं है
खेल रहा है राजस्थान
खेल रहा है राजस्थान
गाँव गाँव के दरमियाँ
खेल रहा है राजस्थान

प्रतिभा की खोज हो रही है
खेल भावना जाग रही है
खेलों के इस महाकुंभ में
धरा धन्य हो रही है।
खेल रहा है राजस्थान
खेल रहा है राजस्थान
गाँव गाँव के दरमियाँ
खेल रहा है राजस्थान





लोकेश कुमार मीणा 'फ़रीद'

अति. निदेशक सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग
राजस्थान, जयपुर



आज वो फिर खुद से नजरें चुरा रहा है
कोई मस'अला जरूर उसको सता रहा है ।

खुद की दहलीज पे कौन दबे पाँव आता है
यकीनन गैर की चौखट की मिट्टी ला रहा है ।

पहर दो पहर के मसले नहीं है, इतिहाँ है
जिस घड़ी उठ के जाता था उस घड़ी आ रहा है।

इतनी उलझन हुई कैसे जरा मालूम तो हो
आज हर लफ़्ज में कसमें खुदा की खा रहा है ।

चाकू खंजर हाथ हथेली सब धो आया
लाल रंग क्यूँ आँखों में फिर उतर रहा है ।

वही अन्दाज है दिलकश अदा भी है मगर
हलक सूखा हुआ है मुँह कलेजा आ रहा है ।

उफ़्फ़! कैसा फलक है किस तरह का आसमाँ है
चंद तारों की गफलत में सिमटता जा रहा है ।

कब का चुक गया "फरीद" महज़ तू बदगुमाँ है
बेवफ़ा से भी मुहब्बत का जमाना आ रहा है।



RAS Club Members Teej Celebration



Cheerful Moments of Teej Celebrations





Cheerful Moments of Teej Celebrations





Cheerful Moments of Teej Celebrations





Cheerful Moments of Teej Celebrations





RAS क्लब बॉक्स प्रीमियर क्रिकेट लीग

17-20 नवम्बर, 2022



- ♦ राजस्थान प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों सहित क्लब मेंबर्स उनके स्पाउस/बच्चों के द्वारा इस प्रतियोगिता में भाग लिया।
- ♦ विजेता टीम को 11 हजार रूपए का नकद पुरस्कार।
- ♦ उप विजेता टीम को 8 हजार रूपए का नकद पुरस्कार दिया गया।
- ♦ इस प्रतियोगिता में 15 मैच खेले गये।
- ♦ प्रत्येक मैच के लिए 1 खिलाड़ी मेन ऑफ द मैच घोषित किया गया।
- ♦ मेन ऑफ द सीरीज घोषित किया गया।





यादगार पल बॉक्स प्रीमियर क्रिकेट लीग-2022





यादगार पल बॉक्स प्रीमियर क्रिकेट लीग-2022





यादगार पल बॉक्स प्रीमियर क्रिकेट लीग-2022





यादगार पल बॉक्स प्रीमियर क्रिकेट लीग-2022





यादगार पल बॉक्स प्रीमियर क्रिकेट लीग-2022





यादगार पल बॉक्स प्रीमियर क्रिकेट लीग-2022





यादगार पल बॉक्स प्रीमियर क्रिकेट लीग-2022





RAS Club - Financial Statement

FY - 2022 - 2023



Income		
S.No	Particulars	Amount (Cr.)
1.	Opening Balance (01-04-2022)	0.91
2.	Membership Fund	3.31
	RAS Officers 0.25	
	Other Officers 0.47	
	Private Members 2.59	
3	Party Event Sale	3.61
4.	Food Sale	3.48
5.	Bar Sale	2.13
6.	Rooms Rent	1.76
7.	Gym & Swimming Pool, Sports	0.54
8.	Miscellaneous Income	0.29
Total		16.03

Expenditure		
S.No	Particulars	Amount (Cr.)
1.	Salary, Electricity Bill & Maintanance etc.	2.92
2.	Restaurant Purchase (Food, Grocery, etc.)	2.32
3.	Bar Purchase	1.20
4.	House Keeping & Other Direct Expenditure	1.09
5.	Expenditure on Fixed Assets	0.33
6.	Expenditure on Sports & Gym	0.23
7.	Repayment of Loans	2.71
8.	Building Construction Payment	1.40
9.	Investment in FD (Fixed Deposit)	2.00
10.	GST/VAT	1.48
11.	Closing Balance (31-03-2023)	0.35
Total		16.03



उपन्यास सांध्य पथिक से



डॉ. सूरज सिंह नेगी

अति. जिला कलक्टर
सवाई माधोपुर



वृद्धावस्था मानव जीवन का अंतिम सत्य है। जीवन का यह पड़ाव अनेक उतार, चढ़ाव, जीवन संघर्ष से आगे बढ़ते हुए अनेक सीखों - अनुभवों-उपदेशों से युक्त एक चलती -फिरती पाठशाला है। वो परिवार भाग्यशाली हैं जिन पर वृद्धों की छत्र-छाया है, जहाँ प्रत्येक निर्णय में वृद्धों की बात और उनकी भावनाओं को अहमियत दी जाती है। लेकिन अफसोस ! आज के दौर में यह सौ फीसद सच नहीं है। आज तो वृद्ध हाशिए पर आने को मजबूर हो गए हैं। उन्हें घर-परिवार-समाज में यह एहसास दिलाने में कोई कसर नहीं छोड़ी जा रही कि अब वो बूढ़े हो चले हैं -किसी काम के नहीं रहे। सोचो क्या गुजरती होगी उनकी आत्मा पर जब अपने ही हाथों बनाए आशियाने में एक अदद कोने को भी वो तरस जाते हों। भरे-पूरे परिवार में कोई बोलने वाला न हो । उनको महज सामान की गठरी की तरह यहाँ से वहाँ उठाकर रखने का रिवाज चल पड़ा हो।

बाहर से ये वृद्धजन भले ही खुश दिखाई दें, चेहरे पर दर्द को न लाते हों लेकिन मन ही मन एक मलाल जरूर रहता है और स्वयं से ही प्रश्न पूछ बैठते हैं-क्या वो सही थे? उनके संस्कारों में कहाँ कमी रही? जो औलाद बेरुखी हो गई। अपने ही औरस को जब उनका बोलना, हँसना, खाना -पीना, रहना तक अखरने लगता है तो ऐसे में वृद्धाश्रमों की शरण लेकर शेष जीवन वहाँ रहने की मजबूरी जैसे उनकी नियति बनता जा रहा है। बेचारे! जीवन की साँझ में एक लुटे हुए मुसाफिर की तरह ठगे से रह जाते हैं।

ऐसा भी नहीं है कि वृद्धजन को ही अपनों के सामीप्य और अपनायत की जरूरत है। असल बात तो यह है कि आज की भागती-दौड़ती आधुनिकता का वरण कर रही युवा पीढ़ी जिनके जीवन में नैराश्य घर कर चुका है, जो चारों तरफ से अपेक्षाओं के बोझ तले दबता जा रहा है, जिसका बचपन छीन लिया गया है, जो

श्रेष्ठ प्रदर्शन करने में अपना सर्वस्व यहाँ तक कि सुख-चैन तक भी लुटा बैठा है तो ऐसे में यही वृद्धजन देवदूत बनकर अपने ज्ञान और अनुभव की गठरी से उसकी तमाम परेशानियों और असमंजस को दूर करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

बस जरूरत है, मानव जीवन के इन दो महत्वपूर्ण पड़ावों-युवा एवं वृद्धजन के मध्य आपसी सामंजस्य, एक-दूसरे के प्रति सम्मान की भावना को बलवती किए जाने की, एक-दूसरे की संवेदनाओं और भावनाओं को समझने की । यह इतना मुश्किल भी नहीं। यदि इस कार्य में हम सफल हो जाते हैं तो भारत जैसे राष्ट्र में दिन प्रतिदिन विकराल रूप धारण कर रही वृद्धजन समस्या का एक सीमा तक हल सम्भव हो सकेगा।

बस इसी तरह की अवधारणा पर आधारित है यह उपन्यास “सांध्य -पथिक से” जिसमें केवल वृद्धजन समस्या का ही जिक्र नहीं है अपितु उससे छुटकारा पाने के उपाय भी सुझाए गए हैं।



MEMORIES



The Magnificent RAS Club



The Magnificent RAS Club



2, संस्थानिक क्षेत्र, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर - 302017 • Ph.: 0141-2703695